

हिम-प्रभा

अंक-94वां



कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक "श्री गिरीश चंद्र मुर्मू" का आगमन



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



2024

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियों ।

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सदभावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी को इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्त्व मिल जाएंगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोक भाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनीं है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारी पूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्घरण देते हैं तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदय को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जगभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम ।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
प्रकाशन: हिम-प्रभा
प्रकाशक : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
तथा
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

अंक: 94 वां
मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रक: अजीत ग्राफ़िक्स
मुख्य पृष्ठ परिचय: गौर्टन कैसल का ऊंचाई से दृश्य

निवेदन

सम्माननीय रचनाकारों से रचनाएं भेजते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करने का विनम्र अनुरोध है :

1. रचनाएं टंकित हो, दो प्रतियों में प्रेषित की जाएं जो स्पष्ट व सुवाच्य हो।
2. प्रकाशनार्थ रचनाएं हिन्दी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला में उपलब्ध कराई जाएं।

संपादक-मण्डल के पास रचनाओं को अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित है। अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है, अतः रचना की मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रखे।

संपादक-मण्डल

मुख्य संरक्षक	सुश्री चंदा मधुकर पंडित प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
संरक्षक	श्री सुशील कुमार प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
अध्यक्ष, संपादन समिति:	सुश्री भानु सिंह उप- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
सहायक, संपादन समिति :	सुश्री मीनू शर्मा उप- महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
संपादन एवं आकल्पन:	सुश्री समता खानचंदानी कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (लेखापरीक्षा)
संपादन सलाहकार समिति:	श्रीमती अनुराधा सूद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री पवन कुमार वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्रीमती सूरज नेगी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती सीमा सहोता सहायक लेखा अधिकारी
सहयोग:	श्री विवेक कुमार (व.ले.प. लेखापरीक्षा) सुश्री श्रुति (क.हि.अ. लेखा व हकदारी) सुश्री शालू (क.हि.अ. लेखा व हकदारी)

प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं। संपादक मण्डल का रचनाकारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए कार्यालय एवं 'हिम-प्रभा' का संपादक मंडल किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं उसमें प्रयुक्त शब्दों के लिए भी रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

संदेश

चंदा मधुकर पंडित

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

एवं मुख्य संरक्षक



एक बार फिर संयुक्त हिन्दी पत्रिका "हिम-प्रभा" अपने नवीनतम अंक के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसे आपके साथ साझा करना सुखद अनुभव है। इसके माध्यम से हम न सिर्फ अपनी रचनात्मक सोच को विस्तार देते हैं बल्कि राजभाषा से जुड़ाव का स्पंदन भी महसूस करते हैं।

पिछले अंक के प्रकाशन के बाद इस कार्यालय में बहुत सी गतिविधियाँ हुई हैं और ये बताते मुझे बहुत गर्व होता है कि गत वर्ष हमारे लिए उपलब्धियों से भरा रहा। ऑडिट सप्ताह में स्थानीय सरकार एवं पंचायती राज संस्थान के प्रतिनिधियों पर केन्द्रित कार्यक्रम से लेकर गौर्टन कैसल के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कर-कमलों से होने सहित कई गतिविधियाँ हुई।

मेरा सदा से यह प्रयास रहा है कि कार्यालय में कार्य के प्रति सकारात्मक वातावरण बना रहे, जिसे आमजन भी जाने और सीएजी कार्यालय की कार्यप्रणाली के प्रति लोगों में समझ निर्मित हो। लेखापरीक्षा विभाग को लेकर आज भी सामान्य जनता में जानकारी व जागरूकता का अभाव है, और इसीलिए गत वर्ष ऑडिट सप्ताह के दौरान हमने शहर में मेराथॉन, साथ ही युवाओं को जोड़ने के लिए रक्तदान शिविर और स्कूली बच्चों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नार्थ जोन के लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों को आमंत्रित कर इंटर जोनल टेबलटेनिस टूर्नामेंट का आयोजन भी किया गया।

इन गतिविधियों का झरोखा पत्रिका के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा अन्य कई रुचिकर विषयों पर सामग्री भी आपको पढ़ने को मिलेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "हिम-प्रभा" का यह अंक राजभाषा हिन्दी के सतत प्रयोग को बढ़ाने में सहायक होगा।

इस कार्यालय में अब तक के मेरे सफ़र के आधार पर कह सकती हूँ कि कर्मियों के दृढ़ संकल्प और बेहतर करने की इच्छा से यह कार्यालय सफलता के सोपान पर आगे बढ़ता रहेगा।

"हिम-प्रभा" की सफलता में कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों तथा संपादक मण्डल का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन में लेखन सामग्री एवं प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक और समृद्ध बनेगी।

शुभकामनाओं सहित।

संदेश

सुशील कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
एवं संरक्षक



हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'हिम-प्रभा' का 94 वां अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय के सदस्यों का राजभाषा के प्रति लगाव और उनकी भावनाओं को अभिव्यक्ति देने और उनके आदान-प्रदान में हिंदी पत्रिका का अहम योगदान रहता है। कार्यालय के सेवारत एवं सेवानिवृत्त कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों के लेख/कविताएँ/संस्मरण/चित्र इत्यादि को 'हिम-प्रभा' पाठकों के साथ साझा करने का अवसर देता है। हमारी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी सदस्यों को आत्मीयता से राजभाषा से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी। मुझे विश्वास है कि सभी लेखक, रचनाकार तथा पाठकगण भविष्य में भी राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करते रहेंगे।

मैं आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय के दैनिक कार्य अधिकाधिक हिंदी में करने का प्रयास करेंगे जिससे राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति और निरंतरता को बनाए रखने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों व रचनाकारों सहित परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से सहयोग देने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों को बधाई तथा शुभकामनाएँ देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शुभकामनाओं सहित।

संपादकीय

भानु सिंह

उप-महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



राजभाषा हिन्दी की हीरक जयंती पर आप सभी को शुभकामनाएं अर्पित करते हुए 'हिम-प्रभा' का नवीनतम अंक आपके समक्ष ला रही हूं, जो एक सुखद अनुभूति है। इस विभागीय पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार तो है, साथ ही कार्यालय के प्रतिभाशाली रचनाकारों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्ति के सृजन का मंच प्रदान करना भी है। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का सूत्र राजभाषा हिन्दी से संपूर्णता पाता है। यह आपसी संबंधों को जोड़े रखने का माध्यम है।

हिन्दी के संवर्धन और इसे सुग्राह्य बनाने हेतु सरकार की प्रतिबद्धता सराहनीय है। राजभाषा विभाग हिन्दी के विकास में तकनीकी के प्रयोग को जोड़ कर हिन्दी को सरल, सहज और संसाधन संपन्न बनाने का सतत प्रयास कर रहा है। हिन्दी दिवस पर गृहमंत्री का संदेश इस प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इसी धारणा को हृदय में धारण कर इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी की सेवा में लगातार अपनी भूमिका बनाए हुए हैं।

कार्यालय में राजभाषा का सहज वातावरण निर्मित करने, कर्तव्यों के साथ-साथ कलात्मकता और रचनात्मकता को उड़ान देने में हिम-प्रभा सफल रही है। हिम-प्रभा की सफलता में कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों तथा संपादक मण्डल का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन में लेखन सामग्री एवं प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करती हूं कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

शुभकामनाओं सहित!!!

संदेश

मीनू शर्मा

उप-महालेखाकार (लेखा व हकदारी)



'हिम-प्रभा' के 94वें अंक के प्रकाशन पर मुझे प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। 'हिम-प्रभा' पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिंदी हमारी पहचान है, यह हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि एक भावना है जो हमें एकजुट करती है हिंदी भाषा की सरलता और गहराई, दोनों ही हमें अद्वितीय अनुभव प्रदान करती है।

कार्यालय की पत्रिका 'हिम-प्रभा' इन सभी भावनाओं का समावेश करती है। 'हिम-प्रभा' पत्रिका में प्रकाशित कविताओं, लेखों एवं रचनाओं की विविधता और समृद्धि हमें एक नए दृष्टिकोण से सोचने को प्रेरित करती है। 'हिम-प्रभा' पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं, लेख, कविताएं, यात्रा संस्मरण कार्यालय के लेखकों तथा रचनाकारों की सोच की गहराई तथा रचनात्मकता को दर्शाती है। इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों तथा लेखकों के प्रति मैं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करती हूँ तथा भविष्य में भी 'हिम-प्रभा' पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित!!!

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक / लेखन विधा	रचनाकार	पृष्ठ
1.	एक देश ऐसा हो (लेख)	सुश्री छाया सिंह	1
2.	अवतार के अवतरण के पूर्व (शिव रचना त्रय: पुस्तक समीक्षा)	सुश्री समता खानचंदानी	2-4
3.	रेकी (लेख)	श्री निरंजन सूद	5-6
4.	विपश्यना: ध्यान की प्राचीन पद्धति (लेख)	श्री मुकेंद्र कुमार	7-10
5.	नायक (लेख)	सुश्री श्रुति	11-12
6.	वृद्धों का संग-परिवार का रंग (कहानी)	सुश्री सुप्रिया पाण्डेय	13-16
7.	बैजनाथ घाटी के दर्शन (यात्रा वृत्तांत)	सुश्री अनुराधा सूद	17-20
8.	जन्माष्टमी (लेख)	श्रीमती सीमा सहोता	21
9.	चीता-एक अदम्य भय अनुभव (आपबीती)	श्री गौरी शंकर	22-23
10.	भाई- प्यार की इन्तेहाँ (कहानी)	श्री पवन कुमार	24-29
11.	मंजिल की तलाश (आत्मकथा का अंश)	श्री हेतराम जसपाल	30-36
12.	झरोखा		37-42
13.	पिता: संघर्षों का मसीहा	श्री सूरज वर्मा	43
14.	यात्रा	श्रीमती विजयलक्ष्मी	44
15.	मैंने देखा है	सुश्री शालू	45-46
16.	वो दौर	सुश्री शालू	46
17.	कहाँ गए वो सुहाने दिन	श्री जगदीश राणा	47-48
18.	बूढ़े हो जाए जब माँ-बाबा	श्री जगदीश राणा	49

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक / लेखन विधा	रचनाकार	पृष्ठ
19.	तुम	श्री प्रभात कुमार	50
20.	बेटियाँ	सुश्री सोनिया शर्मा	51
21.	जिन्दगी है सस्ती?	श्रीमती सुनीता देवी	52
22.	दास्तां	श्री रोहित कुमार मंडल	53
23.	प्रकृति के अनमोल रत्न	श्री हेतराम जसपाल	54
24.	मैंने देखा है	श्री अरुण कुमार	55
25.	कब तक खुद को दोषी ठहराएंगा	श्री अरुण कुमार	56
26.	याद ए रहबर	श्री पवन कुमार	57
27.	ख्वाब-एक नज़्म	सुश्री समता खानचंदानी	58
28.	आज मैं रिटायर हो रहा हूँ	श्री सेवादास संधू	59-60
29.	राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश		61-65
30.	हिन्दी पखवाड़ा-2023 प्रतियोगिता परिणाम		66
31.	वर्ष 2023-24 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखापरीक्षा)		67
32.	वर्ष 2023-24 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखा व हकदारी)		68
33.	हिमप्रभा अंक 93वें के "प्रशंसा पत्र"		69-71
34.	यौन उत्पीड़न का निषेध		73
35.	हिन्दी पखवाड़ा-2023 समापन समारोह		74

एक देश ऐसा हो

छाया सिंह
लेखाकार



हर व्यक्ति के मन में एक सपनों का देश बसता है, जहाँ आदर्श समाज, शांति और समृद्धि की कल्पना की जाती है। एक देश ऐसा हो, जहाँ नागरिक को सम्मान, अधिकार और समान अवसर मिले। यह देश न केवल आर्थिक दृष्टि से प्रगति करे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी संजोए रखे।

एक देश ऐसा हो, जहाँ हर व्यक्ति की पहचान उसकी मानवता से हो, न कि उसकी जाति, धर्म या भाषा से। यहाँ भेदभाव का कोई स्थान न हो, और सबको समान अवसर मिले, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से हों। ऐसा देश हो, जहाँ हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, जिससे वह अपने सपनों को साकार कर सके।

इस देश में स्वास्थ्य सेवाएँ हर व्यक्ति की पहुँच में हो, और कोई भी व्यक्ति केवल आर्थिक तंगी के कारण चिकित्सा से वंचित न रहे। यहाँ हर नागरिक स्वस्थ, सशक्त और खुशहाल जीवन जी सके। कृषि से लेकर उद्योग तक, हर क्षेत्र में प्रगति हो, और पर्यावरण का संरक्षण भी हो।

एक देश ऐसा हो, जहाँ स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हो। यह देश सामाजिक कुरीतियों से मुक्त हो, और हर व्यक्ति के विचारों को सम्मान किया जाए।

एक देश ऐसा हो, जहाँ सरकार पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के सिद्धांतों पर चले। भ्रष्टाचार का कोई स्थान न हो, और जनता की भलाई को सर्वोपरि रखा जाए। न्याय व्यवस्था ऐसी हो, जो त्वरित और निष्पक्ष हो, और हर नागरिक को न्याय प्राप्त हो।

इस देश की सेना केवल रक्षा के लिए हो, न कि आक्रमण के लिए। शस्त्र की जगह शांति के प्रयासों को प्राथमिकता दी जाए, और दुनिया में इस देश की पहचान एक शांतिदूत के रूप में हो।

इस देश का सपना हम सब के दिल में है। यह केवल एक कल्पना नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक इच्छाशक्ति से साकार हो सकता है। जब हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को समझेगा, और इस देश के निर्माण में योगदान देगा, तभी एक ऐसा देश बन सकेगा, जिसका सपना हमने देखा है।

एक देश ऐसा हो, जहाँ हर सुबह आशा और उत्साह के साथ हो, और हर शाम संतोष और शांति के साथ। यही हमारा सपना है, और यही हमारी प्रेरणा।



अवतार के अवतरण के पूर्व (शिव रचना त्रय : पुस्तक समीक्षा)

समता खानचंदानी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



‘ईश्वर बनने से चार हजार साल पहले वो एक मानव था’

क्या काफी नहीं कि मात्र एक पंक्ति आपकी सारी चेतना को एक दिशा में मोड़ दे। जिज्ञासा का वो तीव्र प्रवाह जो इन दिनों किसी पुस्तक को ले कर बहुत कम ही महसूस किया जा सकता है। अव्वल तो यह कि जिन पात्रों को उकेरा गया है वो स्वयं अपने आप में इतने सक्षम है कि काल और समय से परे इस भू लोक में प्रलय लाने को पर्याप्त है... उस पर तुरा यह कि अमीश कह देते है - ये एक काल्पनिक रचना है..फिक्शन है।

यहाँ बात हो रही है अमीश त्रिपाठी के शिव रचना त्रय की। त्रय यानि तीन.. तो देखिए जब आप अमीश की एक पुस्तक उठाएंगे तो बात नहीं बनेगी..कहानी जो बेचैनी उपजेगी, उसका उपचार अगली.. फिर अगली ही कर पाएगी। और फिर जब कहानी खत्म होगी.. आप के पास विचारों का इतना जमघट होगा कि किसी बिंदु पर पहुंच पाना एक लम्बी यात्रा जैसा होगा। इतिहास और पुराणों पर लिखी ऐसी कम ही किताबें है जो आपको लिखे हुए से ज्यादा दिखाती है.. पढ़े हुए से ज्यादा सुनती है।

यहां भूमिका बांधना जरूरी है। जिस परिपाटी में हम ढले है.. समाज ढला है ... दैवत्व उसका अभिन्न हिस्सा है। उसे हाड़-मांस के साधारण इंसानी शरीर में ढालना और ऐसे ढालना कि असाधारण कुछ न लगे ..एक चुनौती भरा काम है। अमीश ने ये काम ऐसे परफेक्शन से किया है कि आपके संदेह छंट जाते है ..वास्तविकता का स्वाद भाता है और अलौकिकता एक आकार लेने लगती है। गले में नील धारण करती आकृति अपने साथ चलती.. फिरती.. बात करती प्रतीत होती है। हम जीते है वो दौर जब एक तिब्बत वासी सम्पूर्ण भारत को पानी के रास्ते पाटता है और एक स्त्री अदम्य आत्मविश्वास और युद्ध कौशल से आपको चारों खाने चित्त कर देती है।

इस रचना त्रय में पहले है ‘मेलुहा का मृत्युंजय’ जो प्रकाशित हुई 2010 में, फिर ‘नागाओं का रहस्य’ 2011 में और अंत में वर्ष 2013 में ‘वायुपुत्रों की शपथ’।

सबसे पहली पुस्तक जो मेरे हाथ आई वो थी, ‘नागाओं का रहस्य’ जो शिव त्रयी की दूसरी पुस्तक थी। पहली पंक्ति-‘सत्यम् शिवम् सुन्दरम्’ से सहज भाव जागा कि सुन्दर होगा या नहीं? फिर आगे बढ़ी ‘ एकम् सत विप्रा बहुधा वदन्ति’ यानि ‘ सत्य एक है, यद्यपि ज्ञानी उसे अनेक जानते है’ अमीश पहले ही पन्ने से बढ़त लेते चलते है ..अभी तो कहानी शुरू भी नहीं हुई थी। उनकी सोच का विस्तार अचंभित करता है.. कहानी कहने का ढंग बांधे रखता है... भौगोलिक व्याख्या ये बताती है कि बचपन में अमीश की जो इतिहासकार बनाने की इच्छा

थी, वो कितनी प्रगाढ़ थी और मानवीकरण की कल्पनाशीलता उन्हें अग्रिम पंक्ति में आरूढ़ कर देती है।

‘नागाओं का रहस्य’ में मेरा परिचय जिस नायक से हुआ वो क्रोध.. घृणा ...प्रतिशोध की भावना में डूबा... आतुर सा... नितांत साधारण मानव के रूप में सामने खड़ा था। हालांकि इस दौर में विकृतियों का प्रसार ही हुआ है फिर भी शारीरिक विकृति की स्वीकार्यता आज भी विचलित करती है। अमीश ने बाखूबी लम्बी नाक और बड़े कान धारण करने वाले चरित्र का चित्रण ऐसी कसावट से किया है कि स्वीकार्य, अस्वीकार्य का भाव ही नहीं जगता। समाज से बहिष्कृत विकृत शारीरिक बनावट वाले लोगों को संगठित कर नागा समुदाय की स्थापना करने वाली गहरे काले रंग और चार हाथ लिए दुष्टों का मर्दन करने वाली रानी का चित्रण अमीश ऐसे करते हैं कि मानवीय होते हुए भी ‘विशेष’ का भाव हृदय को जकड़ें रहता है। कहानी सूर्यवंशी और चंद्रवंशी जीवन-शैली के तार्किक विश्लेषण को ऐसे परोसती है कि हम स्वयं को किसी एक विचारधारा में खोजने लगते हैं। ‘नागाओं का रहस्य’ जिस रहस्य पर खत्म होता है.. वो आगे नहीं बल्कि पीछे देखने को बाध्य कर देगा यदि आपने ‘मेलुहा का मृत्युंजय, नहीं पढ़ी हो।

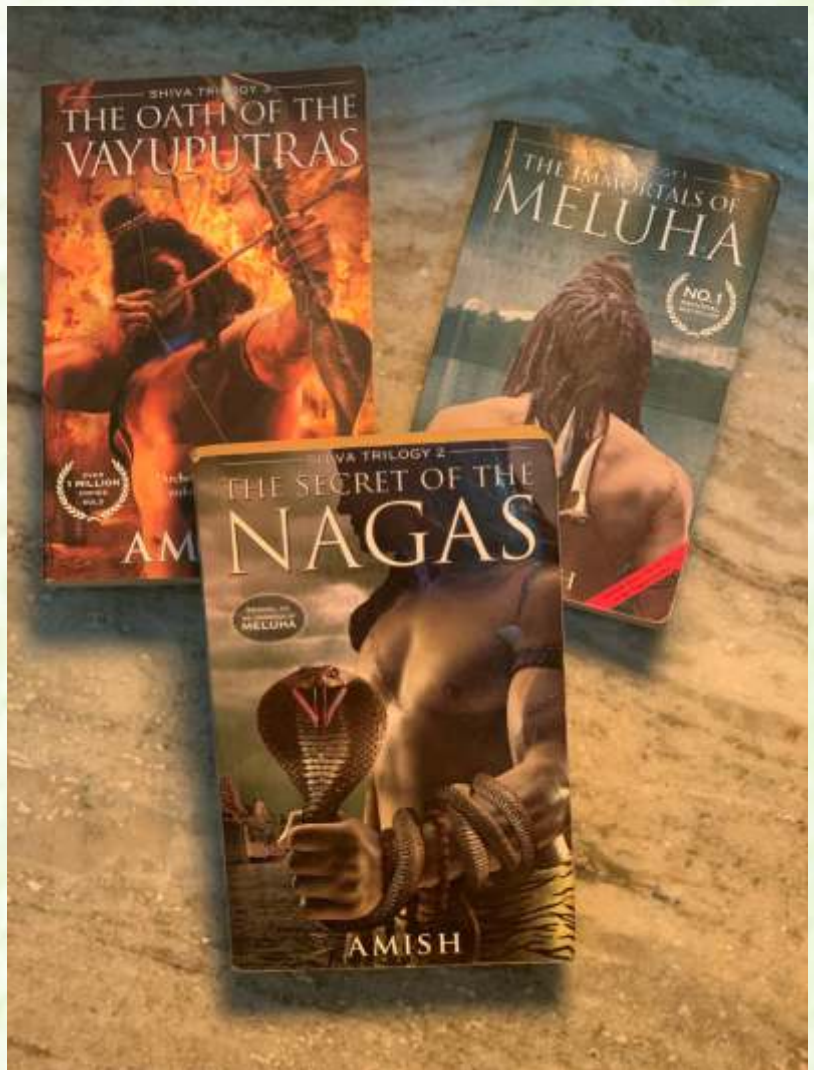
त्रयी की पहली पुस्तक ‘मेलुहा के मृत्युंजय’ की पृष्ठभूमि तिब्बत के कैलाश पर्वत पर रहने वाले एक कबीले वासी के नीलकंठ हो जाने पर रची गई है। इसमें एक अवतरण होता है ईश्वर का या मानव का ? अमीश कहते हैं-कोई व्यक्ति किंवदंती है या नहीं इसका निर्णय इतिहास करता है, ज्योतिषी नहीं। मानसरोवर झील के पवित्र जल से पोषित ये कबीला अपने नीलकंठी नायक के साथ जब मलुहा पहुंचता है तब हमारा साक्षात्कार होता है ऐसे शिव से, जो अनभिज्ञता के बावजूद आत्मज्ञान का उद्घाटन उदहारण बन जाता है, जो ऐसी स्त्री को स्वीकारने में तनिक भी संदेह नहीं करता, जो स्त्रियोचित व्यवहार से इतर युद्ध-कला में निपुण है, जो अपने पूर्व पति को खो चुकी है और जिसे समाज ने विकर्म घोषित किया है। नायिका ‘सती’ का पराक्रम चकित करता है.. सौंदर्य स्पंदित करता है... विवशता व्याकुल करती है... और उसका साहस भीतर रिसता है। अमीश की नायिका सदैव आत्मविश्वासी, स्वनिर्भर, स्वचेतन और आत्मपूर्ण रही है। उसे अपनी स्थिति का भान है, समाज के प्रति कर्तव्यों को जानती है और प्रेम करने से झिझकती नहीं है। अमीश शिव की व्याख्या ‘बुराई के विनाशक, भावुक प्रेमी, भीषण योद्धा, सम्पूर्ण नर्तक, चमत्कारी मार्ग दर्शक, फिर भी भयंकर रूप से क्रुद्ध होने वाले’ के रूप में करते हैं। आरम्भ में प्रेम कथा जान पड़ने वाली कहानी कब नीलकंठ की सांसारिक-आध्यात्मिक यात्रा में परिवर्तित हो जाती है, हम जान ही नहीं पाते। शायद यही कारण है कि कई पाठकों को पाउलो कायलो की ‘द अल्केमिस्ट’ याद आ जाती है। रहस्य बुनना और उसका उद्घाटन अमीश के कहानी-कथन की खूबसूरती है। कही भी सूत्र नहीं छूटते। हर युग में समाज कुछ प्रतिमान स्थापित करता है.. फिर उसका खंडन होता है.. नई रीति जन्मती है... पुरानी खत्म होती है और इस घटना-क्रम में एक अवतार आता है जो अच्छाई और बुराई के मध्य सेतु का कार्य करता है। मंदार पर्वत और सोम रस रूपी अमृत का साक्षात्कार वाकई रोमांचित करता है। गणेश, कार्तिक, नंदी, दक्ष, पर्वतेश्वर, भृगु, बृहस्पति और परशुराम जैसे पौराणिक किरदारों को अमीश ने इस करिश्मे से गूंथा कि हम काल-खंड की दो धाराओं में बहते चले जाते हैं। वर्ण-

व्यवस्था, जाति-व्यवस्था और सांस्कृतिक स्थापत्य की झांकी आपको समाज के विकास को ग्रहण करने की अंतर्दृष्टि देती है। शिव का संवाद उसके मानव होने की वास्तविकता को थामे रहता है ...उनका नीला कंठ और उसका चुनाव उसे पौराणिक कथाओं का अवतार बना देता है।

‘वायुपुत्रों की शपथ’ त्रयी की आखरी पुस्तक है जो शिव और सती की कहानी को उसके अंजाम तक पहुंचाती है। वर्तमान का आविष्कार भविष्य के दुर्भाग्य में परिणत हो जाता है, उसे काल-खण्ड से तोड़ने के लिए किसी विध्वंस के देवता का होना आवश्यक था। मिस्र के योद्धा, दैवीय अस्त्र, परमाणु बम का अन्वेषण, अच्छाई का बुराई में रूपांतरण, सती का आत्म बलिदान, शिव का वैरागी स्वरूप सब कुछ ग्राह्य है क्योंकि पाठक अंततः तर्क करना छोड़ देता है। मानना पड़ता है कि ये अमीश के शिव है ...अमीश की दुनिया है।

अमीश के एक बैंकर से कथाकार बनाने की यात्रा को मैं साहसिक कहूंगी। इसलिए नहीं कि धारा से हट कर कुछ करना मुश्किल है बल्कि इसलिए कि पहली किताब की सफलता को अंत तक बनाए रखने का दबाव झेलना बेहद..बेहद मुश्किल है। अमीश ने चेतना को नया विस्तार दिया है। यहां ये स्पष्ट कर दूं कि अमीश ने मूल रूप से अंग्रेजी में लिखा है, नाम है ‘The Immortals of Meluha’ “The Secrets of Nagas” और ‘The Oath of the Vayuputras’। हिन्दी रूपांतरण विश्वजीत ‘सपन’ का है, जिन्होंने भाषा अनूदित न लगने का खूबसूरत प्रयास किया है। संपादन से ले कर आवरण पृष्ठ भी आकर्षक है और अमीश के शिव रचना त्रय की 30 लाख से ज्यादा प्रतियाँ बिकने में इनका योगदान स्थिर है।

साहित्य में नए की खोज करने वाले पाठकों को पौराणिक पात्रों और कथाओं को नए कलेवर में तराशने वाले अमीश आगे भी तृप्त करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।



रेकी

निरंजन सूद
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



‘रेकी’ प्रकृति तथा इसके द्वारा प्रदत्त ऊर्जा के आधार पर स्पर्श चिकित्सा की पद्धति है। इस प्राकृतिक स्पर्श चिकित्सा में अपने अंदर व अपने इर्द-गिर्द से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग कर अपनों व दूसरों का ईलाज किया जाता है। जब इस ऊर्जा को शरीर में प्रविष्ट किया जाता है तो यह शरीर में उपस्थित रोगों से लड़ने व स्व-निदान की प्रक्रिया को आरंभ कर देती है।

‘रेकी’ में शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित व एकाकार कर हम अपने व दूसरों के जीवन को निरोगी, कष्टमुक्त व सुखी बना सकते हैं। इसकी साधना सरल है व साधक को प्रकृति, ईश्वर व प्रकाश के समीप ले जाती है। विभिन्न रोगों के निदान के लिए शरीर के विभिन्न बिंदुओं पर रेकी मास्टर द्वारा ऊर्जा का प्रवाह किया जाता है जो रोगों को दूर करने में सहायता करती है। इसकी साधना के लिए मन का पवित्र, स्वार्थरहित व बुरे विचारों से मुक्त होना अत्यंत आवश्यक है। इसके अभाव में साधना का इच्छित फल प्राप्त नहीं हो सकता।

‘रेकी’ दो शब्दों ‘रे’ और ‘की’ को मिलाकर बना है। ‘रे’ का अर्थ है ब्रह्मांडीय, आध्यात्मिक, रहस्यमयी, पारलौकिक, ज्ञान अथवा सर्वव्यापक अनंत शक्ति अर्थात् वो शक्ति जो पूरे ब्रह्मांड में उपस्थित है व सर्वव्यापक है। ‘की’ का अर्थ है - जीवन शक्ति अर्थात् जीवंत ऊर्जा बल।

इस समय विश्व में ‘रेकी’ के रूप में जो चिकित्सा पद्धति पहचानी जाती है वो डॉक्टर मिकाओ यूसुई द्वारा पुनर्जीवित स्पर्श चिकित्सा की पद्धति है जिससे जापान में ‘यूसुई शिकोरयाही’ अथवा ‘यूसुई चिकित्सा प्रणाली’ भी कहा जाता है। आधुनिक जन्मदाता इसलिए क्योंकि ये पद्धति पहले भी विद्यमान थी। भगवान बुद्ध और ईसामसीह इसी पद्धति के द्वारा मानव जाति का कल्याण किया करते थे। बाद में धीरे-धीरे ये पद्धति समय के गर्त में लुप्त हो गई। डॉ. मिकाओ यूसुई ने मानव जाति के कष्टों से विचलित हो कर तपस्या की, जिसके फलस्वरूप ईश्वर ने प्रकाश के रूप में प्रकट हो कर उन्हें ‘रेकी’ का ज्ञान प्रदान किया।

‘रेकी’ एक अत्यंत सरल प्रणाली है। ‘रेकी’ सुसंगतता प्राप्त करने के बाद रेकी-चिकित्सक केवल अपने हाथों को अपने ऊपर व अन्य किसी रोगी के ऊपर रख कर व दूर स्थान से ब्रह्मांड से ‘रेकी’ प्राप्त कर अपने हाथों के द्वारा शरीर के विशेष भाग तक उसे पहुँचा सकता है। इस बात को हम एक और सरल उदाहरण से समझ सकते हैं। हम यह तो जानते हैं कि सूर्य में अपार शक्ति है और यह शक्ति अगर इस्तेमाल की जा सके तो कमाल कर सकती है। सूर्य की गर्मी जो हमारे इर्द-गिर्द उपस्थित रहती है, हमें जलाती नहीं पर हम एक लेन्स का इस्तेमाल कर सूर्य की किरणों को एक स्थान पर फोकस कर कागज का टुकड़ा जला सकते हैं।

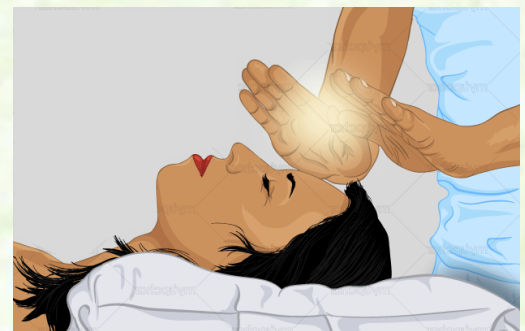
रेकी दर्शन : • खुश रहना और खुश रखना एक सुखद अनुभूति है तथा ईश्वर की ओर जाते मार्ग में उठा एक कदम है। जितना संभव हो मुस्कान बाँटते चलिए।

- समय की धारा में सब कुछ बह जाता है, रह जाती है तो केवल स्मृतियाँ। दूसरों के मन में अपने लिए मधुर स्मृतियाँ बनाइए।
- सर्वोत्तम दृष्टि है अंतर्दृष्टि।
- विरोधियों के प्रति उदार बनें।
- अपनी गलतियाँ स्वीकार करें।
- भरोसा एक सच्चा मोती है। अपने जीवन को दूसरों के भरोसे के मोतियों की माला से सजाइए।
- कल्याण का कोई भी कार्य चुनें और तन-मन-धन से उसमें सहायता करें।

रेकी के अनुसार हमारे शरीर को सात चक्र में विभाजित किया गया है। इसी सप्त चक्र के घेरे में हमारे शरीर के विभिन्न अंग तथा ग्रंथियाँ आते हैं। इन ग्रंथियों को अंतः स्रावी प्रणाली में डाला गया है। रेकी द्वारा उपचार करते समय शरीर के पूर्ण उपचार की ओर ध्यान दिया जाता है तथा ऊर्जा का प्रवाह अंतः स्रावी प्रणाली के साथ चक्र में भी किया जाता है। जहाँ एक ओर अंतः स्रावी प्रणाली हमारे भौतिक शरीर में स्थित है वही चक्र हमारे प्रभामंडल में स्थित हैं तथा दोनों का गहरा आपसी संबंध है। अंतः स्रावी प्रणाली ऊर्जा को चक्र तक पहुंचाती है तथा चक्र ऊर्जा को अंतः स्रावी प्रणाली तक पहुंचाते हैं। चक्र को आँखों से देखना संभव नहीं है केवल उनकी स्थिति को महसूस किया जा सकता है। चक्रों की उपस्थिति को वही महसूस कर सकता है, जिसने रेकी सुसंगतता व दीक्षा प्राप्त की हो। सप्त चक्र निम्न हैं – 1. मूलाधार चक्र, 2. स्वाधिष्ठान चक्र, 3. मणिपूर चक्र, 4. अनाहत चक्र, 5. विशुद्ध चक्र, 6. आज्ञा चक्र, 7. सहस्रार चक्र।

रेकी के पाँच सिद्धांत :

- केवल आज के लिए मैं क्रोध को त्याग दूँगा।
- केवल आज के लिए मैं चिंता से मुक्त रहूँगा।
- केवल आज मैं अपने माता-पिता, बड़ों और गुरुजनों का सम्मान करूँगा।
- केवल आज के लिए मैं अपना कार्य ईमानदारी से करूँगा।
- केवल आज के लिए मैं प्रत्येक जीवित प्राणी के प्रति करुणामय रहूँगा।



डॉक्टर मिकाओ यूसुई द्वारा रेकी के इन पाँच सिद्धांतों को प्रतिपादित करने का एक विशेष उद्देश्य था कि रेकी से उपचार प्राप्त करने वाले के मन में भी स्वयं को उबारने की इच्छा होनी चाहिए।

विपश्यना : ध्यान की प्राचीन पद्धति

मुकेंद्र कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



विपश्यना परिचय

विपश्यना, भारत की सबसे प्राचीन ध्यान तकनीकों में से एक, 2500 साल पहले गौतम बुद्ध द्वारा फिर से खोजी गई थी, जिसे उनके द्वारा सार्वभौमिक बीमारियों के लिए एक सार्वभौमिक उपचार, यानी आर्ट ऑफ लिविंग के रूप में सिखाया गया था। इस गैर-सांप्रदायिक तकनीक का उद्देश्य मानसिक अशुद्धियों का पूर्ण उन्मूलन और पूर्ण मुक्ति का परिणामी उच्चतम सुख है। विपश्यना आत्म-अवलोकन के माध्यम से आत्म-परिवर्तन का एक तरीका है। यह मन और शरीर के बीच गहरे अंतर्संबंध पर केंद्रित है, जिसे शरीर के जीवन को बनाने वाली भौतिक संवेदनाओं पर अनुशासित ध्यान देकर सीधे अनुभव किया जा सकता है, और जो मन के जीवन को लगातार परस्पर जोड़ता है और स्थिति देता है। यह मन और शरीर की सामान्य जड़ के लिए अवलोकन-आधारित, आत्म-खोजपूर्ण यात्रा है जो मानसिक अशुद्धता को भंग कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप प्रेम और करुणा से भरा संतुलित मन होता है।

‘विपश्यना’ का अर्थ है ‘चीजों को वैसे ही देखना जैसे वह वास्तव में हैं।’ यह आत्म-अवलोकन की प्रक्रिया है जो मन को केंद्रित करने के लिए प्राकृतिक श्वास पर ध्यान केंद्रित करने से प्रारंभ होती है।

भारत में विपश्यना को पुनः सार्वभौमिक रूप से प्रसारित करने का श्रेय श्री सत्यनारायण गोयनका जी को जाता है, जिन्होंने न केवल इस विलुप्त प्राय विद्या को जन-जन तक सुलभ किया अपितु इसे संसार भर में सुसंगठित एवं निश्चार्थ सेवा भाव के साथ सेवा स्वरूप में पहुंचाया। श्री सत्यनारायण गोयनका जी को यह विद्या सीखने का मौका बर्मा (वर्तमान में म्यांमार) में मिला जब वो अपने परिवार के साथ म्यांमार में रहकर व्यवसाय कार्य में संलग्न थे।

विपश्यना ध्यान की प्राचीन विधि है एवं गैर सांप्रदायिक रूप में सर्व जन को उपलब्ध है। यह विधि स्व-अवलोकन पर आधारित है जिसमें किसी भी प्रकार का कर्म कांड/ मंत्र इत्यादी शामिल नहीं है। भारत में विपश्यना केन्द्रों के माध्यम से आप इस विद्या को प्रशिक्षित अध्यापकों के मार्गदर्शन में सीख सकते हैं।

विपश्यना ध्यान करके सीखने का विषय है। विपश्यना केंद्रों में विपश्यना का शुरुआती पाठ्यक्रम 10 दिवसों का होता है जोकि न्यूनतम है। एक बार यह पाठ्यक्रम करने के बाद छोटी या बड़ी अवधि के पाठ्यक्रम का चुनाव सुविधानुसार किया जा सकता है। इन पाठ्यक्रमों के लिए 2 से 3 माह पहले सम्बंधित केंद्र की वेबसाइट से सुविधानुसार पाठ्यक्रम का चुनाव करके अपने लिए स्थान सुरक्षित किया जा सकता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है

कि इन केन्द्रों में आवास एवं भोजन का सम्पूर्ण प्रबंध पाठ्यक्रम पूर्ण कर चुके एवं इच्छुक लोगों द्वारा दिए गए दान से संचालित होता है, इसलिए इसकी कोई फीस नहीं ली जाती। सम्पूर्ण व्यवस्था निशुल्क होती है। यह पाठ्यक्रम सभी आयुवर्ग व सभी अवस्था के व्यक्तियों के लिए सुविधाजनक ढंग से व्यवस्थित किये गए हैं। जहाँ किशोर विद्यार्थी, गर्भवती महिलाएं एवं विशेष स्थिति वाले लोग भी इसमें भाग ले सकते हैं। केंद्र व्यवस्थापक सारी व्यवस्था स्वयंसेवकों (पाठ्यक्रम पूर्ण कर चुके व्यक्ति जो सेवा के साथ ध्यान के इच्छुक हैं) की सहायता से संचालित करते हैं।

विपश्यना एवं महालेखाकार कार्यालय

विपश्यना का महालेखाकार कार्यालय से गहरा नाता है। सत्यनारायण गोयन का जी के शिक्षक सयाजी यूबाखिन थे, जिनका जन्म 1899 में रंगून (अबयांगून) में हुआ था। यूबाखिन एक मामूली परिवार में पले-बढ़े। उन्होंने अकादमिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और बर्मा के महालेखाकार के कार्यालय में लेखा क्लर्क के रूप में काम किया। वह कुछ बर्मी लोगो में से थे जो इस कार्यालय में कार्यरत थे, क्योंकि अधिकांश सिविल सेवक ब्रिटिश या भारतीय थे। 1937 में, यूबाखिन ने पहली बार ध्यान की कोशिश की। सायाथेत्ती के एक छात्र - एक ध्यान शिक्षक ने उन्हें आनापान ध्यान (सांस पर केंद्रित) से परिचित कराया। अपने द्वारा अनुभव की गई एकाग्रता से प्रभावित होकर, यूबाखिन ने एक पूर्ण ध्यान पाठ्यक्रम पूरा करने का संकल्प लिया। उनकी इच्छा इतनी प्रबल थी कि वे तुरंत प्यावब्बेगी में सायाथेत्ती के शिक्षण केंद्र के लिए रवाना हो गए। 1950 में, यूबाखिन ने महालेखाकार कार्यालय, बर्मा के विपश्यना संघ की स्थापना की। इस संघ ने आम लोगों, मुख्य रूप से महालेखाकार कार्यालय के कर्मचारियों को विपश्यना सीखने की अनुमति दी। 1952 में, यूबाखिन ने रंगून (अबयांगून) में अंतर्राष्ट्रीय ध्यान केंद्र (आईएमसी) की स्थापना की। यह प्रसिद्ध श्वेदागोनपगोडा के उत्तर में सिर्फ दो मील की दूरी पर स्थित था। कालांतर में आई.एम.सी. विपश्यना अभ्यास का केंद्र बन गया, जो विभिन्न पृष्ठभूमि और राष्ट्रीयताओं के साधकों को आकर्षित करता है।

विपश्यना के प्रमुख पहलू

विपश्यना वास्तव में क्या है और यह ध्यान के अन्य रूपों से कैसे भिन्न है? इसे जानने के लिए विपश्यना के प्रमुख पहलू जानने आवश्यक हैं जो कि निम्न हैं:

1. आत्म अवलोकन:

- विपश्यना आत्म-अवलोकन को प्रोत्साहित करती है। अपने विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं में उलझने के बजाय हम उन्हें निष्पक्ष रूप से देखना सीखते हैं।
- कल्पना कीजिए कि आप नदी के किनारे बैठे हैं, बिना कूदे विचारों के प्रवाह को देख रहे हैं।

2. सांस जागरूकता:

- हम अपनी प्राकृतिक सांस पर ध्यान केंद्रित करके शुरू करते हैं। पेट का उठना-गिरना या नाक पर सनसनी हमारे लंगर बन जाते हैं।
- यदि मन भटकता है (जैसाकि अक्सर होता है), तो धीरे से इसे सांस में वापस लाएं।

3. शरीर की संवेदनाएं:

- विपश्यना मन और शरीर के बीच गहरे अंतर्संबंध पर जोर देती है।
- हम शारीरिक संवेदनाओं पर अनुशासित ध्यान देते हैं - झुनझुनी, गर्मी, दबाव, या असुविधा जो हमारे अस्तित्व के कवच का निर्माण करती है।
- प्रत्येक सनसनी को महसूस करने की कल्पना करें जैसे कि यह भीतर से एक संदेश था।

4. गैर-प्रतिक्रियाशीलता:

- जब विचार उठते हैं - चाहे इच्छा, झुंझलाहट, या ईर्ष्या - हम प्रतिक्रिया किए बिना उनका निरीक्षण करते हैं।

5. करुणा और समता:

- विपश्यना करुणा पैदा करती है - अपने लिए और दूसरों के लिए।
- हम जाने देना सीखते हैं, वास्तविकता को स्वीकार करते हैं जैसा कि यह है। एक शांत झील की कल्पना करें जहां लहरें बसती हैं - मन अपना संतुलन पाता है।

विपश्यना के क्या लाभ हैं?

1. तनाव में कमी:

- शोध बताते हैं कि विपश्यना, अन्य ध्यान प्रथाओं की तरह, हमारे तनाव प्रतिक्रिया को कम कर सकती है।
- विपश्यना पाठ्यक्रमों में प्रतिभागियों ने कम तनाव के स्तर, दिमागीपन में वृद्धि और कल्याण में सुधार की सूचना दी।
- एक शांत झील की कल्पना करें जहां लहरें बसती हैं - मन अपना संतुलन पाता है।

2. चिंता से राहत:

- तनाव से परे, विपश्यना चिंता को कम करने में भी मदद कर सकती है।
- माइंडफुल ने समेडिटेशन (विपश्यना सहित) से जुड़े एक अध्ययन में प्रतिभागियों में चिंता और अवसाद के

स्तर में कमी पाई गई।

- यह एक धागे में धीरे-धीरे गांठों को खोलने जैसा है - प्रत्येक अवलोकन चिंता की पकड़ को ढीला करता है।

3. आत्म-शुद्धिकरण:

- विपश्यना केवल व्यक्तिगत कल्याण के बारे में नहीं है; यह स्वयं को शुद्ध करने के बारे में है।
- निर्णय के बिना अवलोकन करके, हम अपने और अपने आस-पास के लोगों के साथ शांति से अधिक हो जाते हैं
- यह एक दर्पण को चमकाने जैसा है - धीरे-धीरे स्पष्टता प्रकट करना।

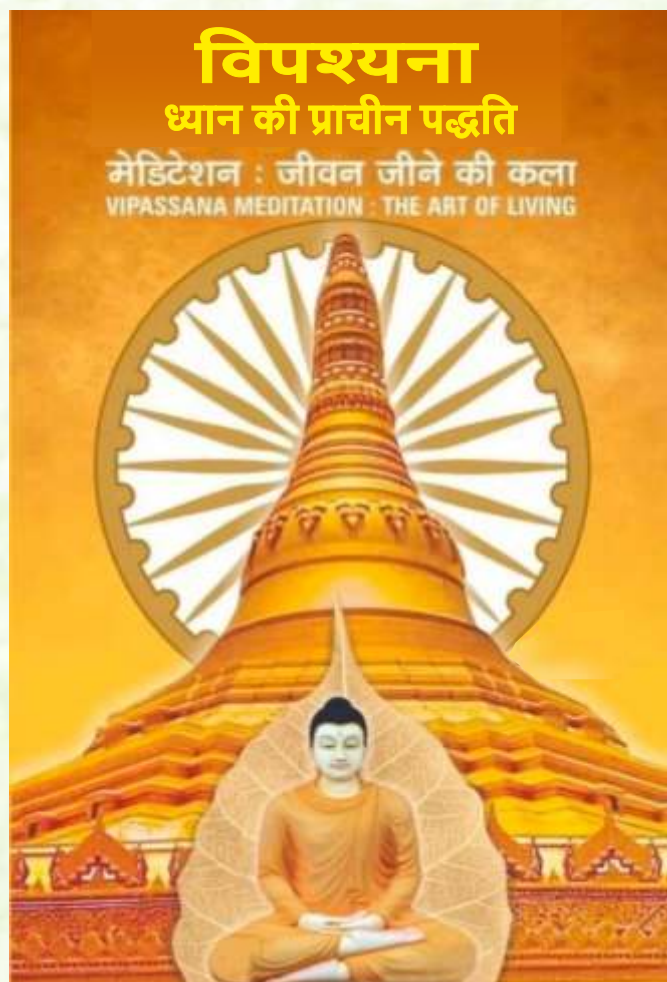
निष्कर्ष

- विपश्यना वास्तविकता से भागना नहीं है। यह खुली आंखों और खुले दिल से वास्तविकता को स्वीकारना है। जब आप अभ्यास करते हैं, याद रखें कि आप पूर्णता की तलाश नहीं कर रहे हैं, आप समझ की तलाश कर रहे हैं। और समझ में आप शांति पाते हैं। तो एक गहरी सांस लें, चुपचाप बैठें, और भीतर के परिदृश्य का पता लगाएं। विपश्यना की पद्धति सीखने के पश्चात सही अर्थों में गीता के एक महत्वपूर्ण श्लोक का अर्थ समझ पाएंगे, जो निम्न है:-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥'

- [अर्थ-तेरा कर्म करने में अधिकार है इनके फलों में नहीं। तू कर्म के फल प्रति आसक्त न हो या कर्म न करने के प्रति प्रेरित न हो]
- अतः जीवन का अर्थ अर्थात् इकीगाई (जापानी शब्द) को समझने से पहले विपश्यना को सीखना सही अर्थों में जीवन को एक नयी दिशा एवं दशा देता है।
- विपश्यना हेतु अधिक जानकारी के लिए विपश्यना की वेबसाइट/लिंक का प्रयोग करें:
<https://www.dhamma.org/en/index>
- <https://www.youtube.com/@VipassanaMeditation>



नायक

श्रुति
कनिष्ठ अनुवादक

शूरवीर सम्राटों, अनगिनत साम्राज्यों, भीषण युद्धों और वीर नायकों की कथाओं से भारतीय इतिहास पटा पड़ा है। चोल, गुप्त, मौर्य सरीखे शक्तिशाली राजवंशों की कथाएँ तो हम पीढ़ियों से सुनते आए हैं। पर क्या आप ऐसे साम्राज्य और उसके नायक को जानते हैं जिन्होंने मुगलिया सल्तनत को सत्रह बार धूल चटाई थी। पूर्वोत्तर भारत के एक ऐसे ही साम्राज्य, उसके वीर नायक और इनके द्वारा लड़े गए निर्णायक युद्ध की आज हम गाथा सुनेंगे। यह यशस्वी साम्राज्य था - अहोम साम्राज्य और इसके चमत्कारी सेना नायक थे - लाचित बोरफुकन। अहोम शब्द का अर्थ ही है - अतुलनीय, जिसे अंग्रेजी में 'अनपैरैलल' कहते हैं। यह वही अहोम साम्राज्य है जिन्होंने सत्रह बार मुगलों की प्रचंड सेना को धूल चटाई थी। यशस्वी अहोम साम्राज्य औरंगजेब की आँखों का कंटक बना हुआ था। यह निर्णायक युद्ध था - सराईघाट का युद्ध।

आइए कूच करें सराईघाट की रणभूमि की ओर जहाँ एक ओर उत्तर गुवाहाटी के आज्ञाथुरी में खड़ी है सत्रह बार की चोट खाई विशाल मुगल सेना और दूसरी ओर खड़े हैं अपनी मातृभूमि की रक्षा में लाचित के रणबाँकुरे। औरंगजेब ने राजा राम सिंह की अगुवाई में एक विशाल सेना गुवाहाटी को पुनः अधिकार में लेने के लिए भेजी थी जिसमें 4000 अश्वारोही सैनिक, 30,000 पैदल सेना, 21 राजपूत नायक, 18,000 बख्तरबंद सेना, 2,000 तीरंदाज, 40 जहाज इत्यादि थे। शाइस्ते खान और दिलेर खान जैसे अनुभवी सेनानायकों से सुसज्जित मुगल सेना संसार की क्रूरतम एवं अजेय सेना में गिनी जाती थी। लाचित को पता था कि खुले मैदान में इस दैत्याकार सेना का सामना संभव नहीं क्योंकि संख्या में यह अत्यधिक थी। एक पल को लाचित को भी शायद लगा हो कि इस दानवाकार एवं आधुनिक संसाधनों से लैस सेना का सामना कैसे करें। लेकिन कहते हैं न कि युद्ध हथियारों से नहीं हौसलों से लड़े जाते हैं। लाचित बोरफुकन, अटॉन बॉरगोहांई और चक्रध्वज सिंह की तिकड़ी ने फिर जो रणनीति बनाई वो आज तक लोकमानस में गुँजायमान है।

सराईघाट के इस निर्णायक युद्ध में लाचित के मोर्चाबंदी की अपनी ही कहानी है। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध असम की छोटी-बड़ी पहाड़ियों और शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र को कौन नहीं जानता ? यही पहाड़ी और बलवान ब्रह्मपुत्र लाचित के सामरिक रणनीति का हिस्सा बनें। लाचित ने मुगल सेना को जलीय मार्ग से युद्ध में उतरने को बाध्य कर दिया क्योंकि यही वह कमजोर कड़ी थी मुगलों की जिस पर वार किया जा सकता था। सीमा की मोर्चाबंदी करने तक लाचित ने राजा राम सिंह को मनोवैज्ञानिक युद्ध में व्यस्त रखा। पूर्वोत्तर को विदेशी आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए कई दीवारें और बड़े-बड़े परकोटों का निर्माण किया गया। ऐसे अनेक साक्ष्य और अभिलेख हैं जो लाचित के एक रात में कई परकोटों के निर्माण की जादुई कहानी कहते हैं।

लाचित के शब्द "देखोत-कोय-मुमाई-डांगौर-नहॉई" अर्थात् 'देश से मामा बड़ा नहीं है' असम का पर्याय बन चुका है। आज भी गुवाहाटी में सराईघाट युद्ध के सभी साक्ष्य अपनी जगह यथावत खड़े हैं। ऐसे अनेक नायकों के नाम हैं जिनका उच्चतम बलिदान अविस्मरणीय है।

इस युद्ध की महत्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यदि यह युद्ध जीता न जाता तो समस्त पूर्वोत्तर भारत समेत दक्षिण-पूर्व एशिया दासता की जंजीरों में बंध जाता। नीले आकाश के नीचे सैनिकों की ललकार, घोड़ों की टापें, हवा काटते हुए तीरों और तलवारों की आवाज, शूरवीरों के शव, रक्त-रंजित और धूल-धुसरित गुवाहाटी का सराईघाट मैदान आज भी रातों में जैसे जी उठता है। नीलांचल पर्वत की गोद में बसा विश्व प्रसिद्ध माँ कामाख्या का मंदिर अन्य असंख्य धरोहरों की भाँति इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह जाता यदि सराईघाट का युद्ध जीता न जाता। भविष्य में जब भी पूर्वोत्तर के रेस्तरां, मॉल, पार्क, खेल का मैदान, म्यूजिक कॉनसर्ट या अन्य और कहीं भी जाएं तो इसकी हवाओं में घुले चमत्कारी मोर्चेबंदी को, इस मिट्टी के महान योद्धाओं को, और उनकी ऐतिहासिक जीत को जरूर महसूस करें। आप शायद महसूस करें न करें लेकिन पूर्वोत्तर आपसे हर बार बहुत कुछ कहता है। गुवाहाटी ने आज भी अपने सीने में सराईघाट के युद्ध को संजो रखा है। घाटी सदैव पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। यह खूबसूरत वादी और चक्षुप्रिय हरियाली वीरों के रक्त से सिंचित है। जब कभी ब्रह्मपुत्र में नौका विहार का आनंद लें तो उसकी हिलोरों में तैरती उन वीरों की वीरगाथा सुनें। आइए इतिहास का ये पन्ना भी पलटें.....



वृद्धों का संग – परिवार का रंग

सुप्रिया पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी



प्रतिदिन की तरह ही नंदिनी और उत्कर्ष नारायण सुबह उठकर अपने 10 वर्षीय बेटे राहुल को तैयार करके स्कूल बस में बैठा कर भेज चुके थे। बेटे को छोड़ने के बाद घर आकर दोनों लोग अपने ऑफिस के लिए तैयार होने लगे। ऑफिस के लिए तैयार होते हुए छोटी-छोटी खिट-पिट चल ही रही थी कि उत्कर्ष ने नंदिनी को याद दिलाया “कल ऑफिस से छुट्टी ले लेना नव जीवन केंद्र जाना है”। नंदिनी ने हामी भरते हुए उत्कर्ष को टिफिन पकड़ाया और बोली “तुम गाड़ी निकालो। मैं माँ जी को दवा खिला कर, खाने के बारे में बता करके आती हूँ”।

उत्कर्ष की वृद्ध माँ रत्नावली भी उनके साथ ही रहा करती थी। रत्नावली के पति की मृत्यु के बाद उनमें उदासीनता आ गयी थी और उनका बुढ़ापा तीव्रगति से बढ़ता जा रहा था। इस कारण उनका ध्यान रखना अब काफी समय मांग रहा था जिसका अभाव शहरी जीवन में अक्सर रहता है। उत्कर्ष और नंदिनी ने सोचा कि उनका उचित ध्यान रखने में वह असमर्थ हैं वह दोनों हर समय घर पर रहकर उनका ध्यान नहीं रख सकते। यह सोचकर कर उन दोनों ने कई वृद्धाश्रमों का निरीक्षण करने के बाद नव जीवन केंद्र नाम के वृद्धाश्रम में रत्नावली को भेजने का निश्चय किया।

नंदनी रत्नावली को नाश्ता खिलाकर दवा देते हुए बोली “माँ जी आज दोपहर खाने में आपका पसंदीदा छोला, पूरी, रायता और चावल बना है। गरम करके.....”

नंदिनी खाने का बता ही रही थी कि उत्कर्ष की आवाज़ आई “नंदिनी, जल्दी करो। ऑफिस को लेट हो जाएगा और ज्यादा देर करोगी तो ट्रैफिक बढ़ जाएगा।”

यह सुनकर नंदिनी ने तुरंत अपना बैग उठाया और निकल गयी।

इधर रत्नावली पूरा दिन अकेली रहा करती थी। वह आँखें बिछाये अपने पोते की राह देख रही थी। उनका और राहुल का आपस में बहुत लगाव था। रत्नावली अकेले बैठे-बैठे अपने पोते की चंचलता भरी मुस्कान और मासूम सवालों के बारे में सोच ही रही थी। उतने में दरवाज़े की घंटी बजी। उन्होंने दरवाज़ा खोला तो राहुल फटाफट दादी के गले लगकर बोला “दादी! पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।” रत्नावली ने मुस्कुराते हुए कहा “चलो हाथ-मुँह धुल कर कपड़े बदल लो तब तक मैं गरम-गरम छोला-पूरी लगाती हूँ।”

छोला-पूरी सुनते ही राहुल उल्लास से भर गया और तुरंत ही हाथ-मुँह धुलकर वह कपड़े बदल आया। फिर वह दादी को अपने दिन भर की गतिविधियों के बारे में बताने लगा " पता है दादी! आज मेरे स्कूल में लास्ट पीरियड गेम्स का था और उसमें हमारे सर ने सबकी दौड़ करवाई। और वह नीरज बहुत चींटिंग करता है उसने मेरे शू-लेस खोल दिए थे। फिर मैंने अपने जूते उतारे और ज़ोर से दौड़ लगायी। "

दोनों ने बातें करते-करते अपना खाना खाया और फिर राहुल अपनी दादी के पास सो गया। रत्नावली की आँखें राहुल को प्यार से सहलाते हुए नम हो गयी थी क्योंकि कल वह दिन आने वाला था जब उनके बच्चे उनका वृद्धाश्रम में दाखिला कराने वाले थे। इस बात से रत्नावली भी अनभिज्ञ नहीं थी।

दूसरे दिन नारायण दंपति रत्नावली का सामान बैग में तैयार कर चुके थे। इतना सामान देखकर राहुल ने बड़ी हैरानी से पूछा "दादी कहीं जा रही हैं क्या ?"

नंदिनी ने बहुत सोचकर बोला " बेटा! आप स्कूल चले जाते हो। मैं और आपके पापा ऑफिस चले जाते हैं तो दादी का ख्याल कौन रखेगा! इसलिए दादी नए घर जा रही हैं जहाँ उनके बहुत सारे दोस्त होंगे और उनका ख्याल रखने के लिए लोग भी। वह जब भी कुछ मांगेगी तुरंत उनको मिल जाएगा। उनको हम लोगों के आने का इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। और हम लोग दादी से मिलने हर महीने जाया करेंगे। "

ये सुनकर राहुल ने सोचा और कहा "तब तो मैं भी दादी के साथ ही रहूँगा। उनके नए घर में। "

किसी तरह नंदिनी ने राहुल को समझाया और उसके बाद तीनों लोग रत्नावली को लेकर वृद्धाश्रम में दाखिल करा आए।

वृद्धाश्रम से लौटने के बाद राहुल अपनी दादी को याद कर रहा था। वह सोच रहा था- अभी दादी होती तो हम तारों का नाम रखकर नयी-नयी कहानियां बनाते। मैं उनके साथ कितनी मस्ती करता था। यही सब सोचते हुए राहुल को नींद आ गयी।

अगले दिन सुबह राहुल स्कूल बस में उदास मन से खिड़की के बाहर देख रहा था कि अचानक उसे वह जगह दिख गयी जहाँ उसकी दादी रहने गई थी। राहुल को अपनी दादी से मिलने का मन करने लगा। जैसे ही स्कूल बस रुकी वह चुपके से अपनी दादी से मिलने के लिए निकल गया।

वृद्धाश्रम पहुंच कर वह अपनी दादी को ढूढ़ने लगा। अचानक से रत्नावली को राहुल की आवाज़ सुनाई दी और वह अपने कमरे से बाहर निकली और कांपते हुए हाथ से उसको गले लगा लिया। दोनों की आँखों में आंसू थे। राहुल ने सिसकते हुए अपनी दादी से कहा, "दादी मैं अब आपके पास ही रहूँगा। मुझे आपके पास रहना है"।

रत्नावली कुछ कह न पाई। वह अपने पोते को वहां देखकर स्तब्ध हो गयी। राहुल ने दादी का हाथ

पकड़ा और हिलाकर बोला "बोलिए न दादी"।

रत्नावली ने खुद को संभाला और बोली "तुम यहाँ कैसे आए!"

राहुल ने दादी को सब कुछ बताया तो दादी घबरा गयी और फिर अपने पोते को बहुत प्यार से समझाया "राहुल जो आज तुमने किया वह अच्छी बात नहीं है। ऐसे बिना किसी बड़े के साथ के कहीं नहीं जाते। कहीं भी जाने से पहले हमेशा अपने मम्मी-पापा से पूछ कर जाना चाहिए। तुमको पता है मम्मी-पापा अपने बच्चे के लिए कितना परेशान होते हैं। वो तुमको ढूढ़ रहे होंगे।"

राहुल को दादी की बात समझ तो आई लेकिन एक सवाल भी आया। उसने पूछा "आप भी तो मम्मी-पापा के लिए परेशान होती होंगी। आप भी उनको रोज़ ढूढ़ती होंगी। चलिए न दादी। घर चलते हैं। वहाँ पर मैं और मेरा पिचकू बन्दर दोनों आपको मिस करते हैं" ये सुनकर वहाँ खड़े सभी लोगों की आँखें नम हो गयी। लोग सच ही कहते हैं बच्चे भगवान का रूप होते हैं।

राहुल के हठ को देखते हुए रत्नावली को उसके साथ घर जाना ही उचित लगा। उन्होंने हाँ में सर हिला दिया। रत्नावली ने वृद्धाश्रम के ऑफिस में जाकर उत्कर्ष और नंदिनी को फ़ोन पर सब बताने को कहा और साथ ही एक ऑटो मंगवाने का आग्रह किया। रत्नावली ऑटो में राहुल को छोड़ने निकल गयी। घर के पास पहुँचते ही ऑटो खराब हो गया। रत्नावली ने ऑटो वाले को पैसे दिए और दोनों ने घर की ओर पैदल चलना शुरू कर दिया। थोड़ा चलते ही रत्नावली को ट्रैफिक के शोर-गुल से घबराहट होने लगी और उस घबराहट से उनकी लाठी गिर पड़ी। राहुल ने दादी को एक कोने में बिठाया और अपने बैग से अपनी पानी की बोतल निकाल कर दादी को पानी पिलाया। फिर उसने दादी की लाठी उठायी और उनके हाथ में पकड़ा दिया और पूछा "दादी आप ठीक हैं?" दादी लाठी के सहारे उठी और बोली "चलो घर पहुँच ही गए हैं।" रत्नावली ने चलना शुरू ही किया था की राहुल ने उनका दूसरा हाथ बड़े स्नेह से अपने हाथ में थाम लिया और ज़ेबरा क्रॉसिंग पर खड़े होकर हरी बत्ती के बंद होने का इंतज़ार करने लगा। रत्नावली की घबराहट मानो उड़न छू हो गयी। हरी बत्ती के लाल में बदलते ही गाड़ियां रुक गयी और राहुल ने दादी को सड़क पार कराना शुरू कर दिया।

सड़क के दूसरी तरफ खड़े उत्कर्ष और नंदिनी यह पूरा दृश्य देख रहे थे। स्नेह और प्रेम से रत्नावली के जीवन में उमंग आते हुए देख उन्हें एहसास हुआ कि मनुष्य को जीवन यापन के लिए सिर्फ भौतिक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है, उसे भावनात्मक तौर पर भी सहारा चाहिए होता है। उन्हें एहसास हुआ कि उनकी माँ को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत अब है। आज उस एक क्षण में उन्हें परिवार का अर्थ महसूस हुआ जो वह रोज़ मशीन के जैसे निर्धारित दिनचर्या में काम करते हुए जैसे भूल ही गए थे।

जैसे ही राहुल और रत्नावली सड़क के दूसरी तरफ पहुँचे वैसे ही उत्कर्ष और नंदिनी ने उन दोनों

को गले लगाया और रत्नावली से माफ़ी मांगी। अपने बच्चों के गले लगते ही रत्नावली की आँखों से अश्रु की धारा बह गयी और वह बोल पड़ी " बेटा, मैं तुम सब के साथ ही रहना चाहती हूँ। तुम सबको रोज़ देखने में ही मेरा सुकून है। " ये सुनकर उत्कर्ष भावुक होकर बोला " माँ ! आप हमारे साथ नहीं, अब हम आपके साथ रहा करेंगे। चलिए घर चलते हैं। "

राहुल ने जैसे ये सुना उसकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। फिर पूरा परिवार खुशी- खुशी घर को चल दिया।



बैजनाथ घाटी के दर्शन

अनुराधा सूद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



हिमाचल प्रदेश राज्य देवभूमि के नाम से जाना जाता है, इस राज्य का काँगड़ा जिला अपने धार्मिक स्थलों तथा शक्तिपीठों के कारण काफ़ी प्रसिद्ध है। वर्ष 2021 में काँगड़ा जिला की अग्निशमन चौकी बैजनाथ के निरीक्षण के दौरान बैजनाथ शहर में स्थित भगवान शिव को समर्पित एक पौराणिक नागर शैली में बने मंदिर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मंदिर उत्कृष्ट वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है तथा इसे भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित किया गया है। इसकी सभी दीवारों पर अलग-अलग देवी-देवताओं की बहुत ही सुंदर प्रतिमाएं उकेरी गई हैं। यहाँ चट्टानों पर नक्काशी किए हुए दो बड़े शिला-लेखों पर संस्कृत तथा अन्य भाषा में लिखा गया है, जिससे इस मंदिर का इतिहास बहुत पुराना जान पड़ता है। यहाँ से निकटतम हवाई अड्डा लगभग 38

कि.मी. दूर धर्मशाला के पास गगगल में तथा निकटतम नैरो-गेज रेलवे स्टेशन 2 किलोमीटर दूर पपरोला में है। यहाँ से धौलाधार की सदा बर्फ से ढंकी रहने वाली खूबसूरत पर्वत-श्रृंखला भी दिखाई देती है।

भगवान शिव के अवतार बैजनाथ अथवा वैद्यनाथ को सभी भक्तों को उनके दुःखों और पीड़ाओं से छुटकारा दिलाने व उनका उपचार करने के रूप में जाना जाता है। भगवान शिव के इसी अवतार के कारण इस स्थान का नाम बैजनाथ पड़ा। ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण अज्ञातवास के दौरान पांडवों द्वारा किया गया था लेकिन वे इसका निर्माण-कार्य पूरा नहीं कर पाए। मंदिर के पुजारी के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 13वीं शताब्दी के आरम्भ में अहुका और मन्युका नामक दो स्थानीय व्यापारियों तथा यहाँ के तत्कालीन स्थानीय राजा द्वारा करवाया गया था। तत्पश्चात भी कई बार आई प्राकृतिक आपदाओं के कारण इस मंदिर के कई भागों को काफ़ी नुकसान पहुँचा लेकिन साथ-साथ इसका पुनर्निर्माण भी होता रहा।

इस मंदिर के साथ कई किंवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। ऐसी मान्यता है कि त्रेतायुग में इस क्षेत्र में भगवान शिव के परम भक्त लंकापति रावण ने असीम-शक्तियाँ प्राप्त करने हेतु घोर तपस्या करते हुए अपने नौ सिर काट कर शिव को अर्पित कर दिए थे तथा जैसे ही अपना दसवाँ सिर काटने वाला था कि भगवान शिव प्रकट हुए और उन्होंने रावण का हाथ पकड़ लिया और उसके सभी सिर वापिस लगा दिए। रावण की भक्ति से खुश होकर

शिवजी ने उसे एक वर मांगने को कहा। रावण ने कहा कि मैं आपके शिवलिंग स्वरूप को लंका में स्थापित करना चाहता हूँ अतः मुझे अपने शिवलिंग के दो स्वरूप प्रदान करें तथा मुझे बलशाली बनाए। भगवान शिव ने उसे तथास्तु कहते हुए अपने शिवलिंग के दो स्वरूप दिए तथा कहा कि इन स्वरूपों को जहाँ भी भूमि पर रखोगे ये उसी स्थान पर स्थापित हो जाएंगे, अतः इन्हें रास्ते में भूमि पर नहीं रखना। ऐसा कहते ही शिव जी अंतर्धान हो गए।

ऐसा कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने अपनी माया रची तथा जैसे ही रावण बैजनाथ पहुँचा उसे लघुशंका जाने की तीव्र इच्छा हुई उसने वहाँ मिले एक ग्वाले को सब समझाया और उसे दोनों शिवलिंग सौंप लघुशंका निवारण हेतु चला गया। लेकिन विष्णु के माया-जाल के कारण ग्वाले को उतना इंतजार करना भी बहुत लम्बा लगा तथा उसे दोनों शिवलिंग भी उठाने बहुत भारी लग रहे थे अतः वह उनको जमीन पर रखकर चला गया। रावण जब लघुशंका से निवृत्त होकर वापिस आया तो वह दोनों शिवलिंग को उठाना तो दूर उन्हें हिला भी नहीं पाया। उसने थक-हार कर वे दोनों शिवलिंग उधर ही छोड़ लंका की ओर प्रस्थान कर गया।

बैजनाथ शहर में आपको एक भी सुनार की दुकान नहीं मिलेगी। यहाँ के लोग जेवर इत्यादि खरीदने के लिए पास के शहरों में जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि रावण की लंका जल जाने के कारण उसकी इस तपोस्थली में जिस किसी ने भी सुनार की दुकान खोली उसे व्यापार में घाटा ही उठाना पड़ा तथा वह पूरी तरह उजड़ गया, जिस कारण यहाँ के लोगों में एक अनजाना डर बैठ गया। इसके अतिरिक्त यहां लंकापति रावण का पुतला भी नहीं जलाया जाता, क्योंकि रावण शिव का परम भक्त था। शायद रावण की शिव के प्रति महान आस्था और भक्ति को देखते हुए उसे सम्मान देने के लिए ऐसा किया जाता हो।

मंदिर परिसर में कुछ अन्य इष्ट देवी-देवताओं के छोटे-छोटे मंदिर तथा कुछ में शिवलिंग स्थापित किए गए हैं। मुख्य मंदिर के सामने नंदी बैल की एक बड़ी सी प्रतिमा है, लोग इसके कान में अपनी इच्छा फुसफुसा रहे थे। मैंने और कार्यालय के मेरे अन्य सहकर्मी ने भी नंदी बैल के कान में अपनी इच्छा व्यक्त कर दी। मुख्य मंदिर में शिव को चढ़ाने वाले जल और दूध की निकासी के लिए एक नाली मंदिर के बाहर की ओर बनी है इसका रास्ता एक लोहे की चैन लगाकर बंद किया गया है यहाँ शिव मंदिर ट्रस्ट द्वारा एक नोटिस बोर्ड पर लिख कर इस शिव गंगा-जल की नाली को पार नहीं करने की हिदायत दी गई है।

मंदिर के परिसर से बाहर छोटे-छोटे स्टाल और काफ़ी सारी दुकानें हैं, जहाँ आपको सभी तरह की पूजा-सामग्री, प्रसाद, स्मृति-चिन्ह, मूर्तियाँ, ऑडियो-कैसेट, पूजा-बर्तन तथा खाने-पीने की वस्तुएं मिल जाएगी। शिव मंदिर के पास ही बहती बिनवा नदी पर बना खीर-गंगा घाट है, जहाँ मंदिर आने वाले बहुत सारे श्रद्धालु स्नान करते हैं। यहाँ के आस-पास के क्षेत्र के लोग जो हरिद्वार नहीं जा पाते वो अपने मृत परिवार-जनों के क्रिया-कर्म और अस्थि-विसर्जन इस घाट पर आकर करते हैं। शिव-रात्रि, निर्जला-एकादशी तथा सावन के महीने में यहाँ लोगों की काफ़ी भीड़ रहती है। बैजनाथ के मंदिर को देखने के लिए विदेशी नागरिक भी बड़ी संख्या में आते हैं।

शनि मंदिर महाकाल

इसी कार्यालय भ्रमण के दौरान, बैजनाथ से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित शनि मंदिर महाकाल के दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। महाकाल मंदिर में भगवान शिव का उनके तेज से उत्पन्न स्वयंभू तेजोलिंग रूप विराजमान हैं। यहां शिवलिंग के जलाभिषेक का जल व दूध कहा जाता है यह आज तक रहस्य बना हुआ है। मंदिर के मुख्य पुजारी ने बताया कि भगवान शिव का साक्षात् तेजोलिंग रूप शिव



पिंडी के रूप में केवल यहाँ महाकाल मंदिर में ही विद्यमान है जिसके साथ अपरोक्ष रूप में महाकाली का वास है तथा भारत में महाकाल का दूसरा मंदिर उज्जैन में स्थापित है जहाँ भगवान शिव ज्योतिर्लिंग के रूप में हैं।

महाकाल तथा शनिदेव के गुरु-शिष्य के रिश्ते के नाते यहाँ लोग चिरकाल से ही भगवान शिव के महाकाल रूप के साथ ही शनिदेव की पूजा करते आ रहे हैं। यहां बने मंदिर में नवग्रह पूजन भी किया जाता है। इस मंदिर में भगवान शनिदेव का क्रूर नहीं अपितु सौम्य रूप विराजमान है। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर आने वाले लोगों को दर्शन मात्र से ही महादेव अकाल मृत्यु के भय से मुक्त कर मोक्ष प्रदान करते हैं तथा शनिदेव शनि की साढ़ेसाती का असर कम करते हैं।

महाकाल मंदिर का पौराणिक इतिहास जालंधर दैत्य से जुड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि जालंधर दैत्य की तपस्या से खुश होकर भगवान शिव ने उसे वरदान दिया था कि काल भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। वरदान प्राप्ति के बाद जालंधर दैत्य सभी देवी-देवताओं को परेशान करने लगा तब देवताओं ने भगवान शिव की शरण ली, लेकिन जालंधर दैत्य की पत्नी वृंदा के पतिव्रत धर्म के कारण कोई भी उसे मारने में सक्षम नहीं था। अतः भगवान शिव ने विष्णु से माया रचने के लिए कहा। भगवान विष्णु की माया से उसकी पत्नी वृंदा का पतिव्रत धर्म टूट गया। वृंदा का पतिव्रत धर्म टूटने के बाद जब भगवान शिव जालंधर दैत्य को मारने लगे तो जालंधर ने कहा कि आपने मुझे वरदान दिया था कि मुझे काल भी नहीं मार सकेगा, तब इस स्थान पर भगवान शिव ने महाकाल का रूप धारण करके जालंधर दैत्य का संहार किया था। जालंधर दैत्य ने अपनी अंतिम इच्छा में कहा कि मेरा वध जहां भी हो वह स्थान मेरे नाम से विख्यात हो और महाकाल के रूप में भगवान शिव वहां विराजमान हों। अतः इस क्षेत्र को जालंधर पीठ के नाम से भी जाना जाता है।

एक किंवदन्ती अनुसार पांडव अपने अज्ञातवास के दौरान अपनी माँ कुंती के साथ इस स्थान पर ठहरे थे तथा उनके द्वारा ही इस मंदिर का निर्माण किया गया था। वर्ष 1905 में आए महाविनाशकारी भूकम्प के दौरान इस मंदिर का काफ़ी भाग नष्ट हो गया था तत्पश्चात् यहाँ के स्थानीय राजा द्वारा वैदिक शैली में निर्मित इस मंदिर

का पुनः निर्माण करवाया गया। ऐसा भी कहा जाता है कि इस मंदिर में सप्त ऋषियों का भी आगमन हुआ था जिसके प्रतीक स्वरूप यहाँ पर चार जल-कुण्ड मंदिर परिसर के अंदर की ओर बने हैं जिसमें से शिव-कुण्ड के जल से शिव-लिंग का जलाभिषेक, विष्णु-कुण्ड के जल से स्नान तथा ब्रह्म-कुण्ड का जल पीने के लिए प्रयोग में लाया जाता है जबकि सती-कुण्ड के जल का प्रयोग नहीं किया जाता, मान्यता है कि यहाँ पूर्व में तीन महारानियाँ सती हुई थी। तीन जल-कुण्ड (लक्ष्मी, कुंती व सूर्य) परिसर के बाहर की ओर बने हैं। कुंती-कुण्ड के जल से कुत्ते के काटे हुए व्यक्तियों को स्नान कराया जाता है ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से रेबीज जैसे खतरनाक रोग से बचे रहते हैं। यहाँ आने वाले श्रद्धालु इन जल-कुण्डों में धार्मिक रीति-रिवाजों अनुसार पैसों के सिक्के डाल रहे थे।

भगवान शनि देव के मंदिर के चारों ओर 12 राशियों की गृह-शांति हेतु सभी 12 राशियों के नाम के अलग-अलग स्तंभ बनाए गए हैं। यहाँ आने वाले लोग अपनी राशि के अनुसार इन स्तंभों के ऊपर लाल रंग की डोरी बाँधते हैं। मान्यता है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवनकाल में शनिदेव अवश्य आते हैं और वे सभी राशियों से ऊपर चलते हैं। आस्था अनुसार माना जाता है कि डोरी बाँधने से शनि ग्रह की शांति होती है जिस कारण मनुष्य घातक रोगों, अल्प मृत्यु तथा कोर्ट कचहरी के चक्करों से मुक्त रहता है। शनि देव के मंदिर की बाईं ओर एक ऊँचा मंच बनाया गया है जहाँ पर शनि-शिला स्थापित की गई थी लोगों द्वारा शनि-शिला पर चढ़ाया गया तेल नीचे बनाए गए बड़े से टैंक में इकट्ठा हो रहा था, इसी मंच पर लोगों द्वारा दान किए गए अनाज- तिल, माह, चावल, गेहूँ इत्यादि को एकत्र करने के लिए बड़े-बड़े ड्रम रखे गए हैं। शनि देव के मंदिर के दाईं ओर काफ़ी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की गई है। इस मंदिर के परिसर में शनिदेव के अतिरिक्त गणपति महाराज जी की प्रतिमा तथा दुर्गा माता व नागराज के मंदिर भी यहाँ स्थापित हैं।

स्थानीय लोगों से की गई चर्चानुसार पूर्व में शव को अंतिम संस्कार से पहले महाकाल मंदिर के समक्ष रखा जाता था तथा पास ही बने श्मशानघाट में जलाया जाता था लेकिन जिस दिन कोई शव नहीं आए तो देर रात को घास का पूला जलाया जाता था। श्मशानघाट पास होने के कारण लगभग पाँच दशक पूर्व तक यह स्थान अघोरी साधुओं की तपोस्थली रहा है तथा उनके द्वारा इस स्थान पर अघोरी-साधना व तंत्र-विद्या की जाती थी। लोगों को केवल शिवरात्रि पर ही आने की अनुमति होती थी। लेकिन अब श्मशानघाट को मंदिर से बाहर कर दिया गया है।

अगस्त-सितम्बर के मध्य माह (भादो) में यहाँ चार शनिवार को काफ़ी बड़े मेले लगते हैं। यहां भाद्रपद मास के मेलों की तरह निर्जला एकादशी को भी विशेष कार्यक्रम तथा मेले का आयोजन होता है। कहा जाता है कि भगवान शिव की पूजा का निर्जला एकादशी पर विशेष महत्व है। मंदिर के रास्ते में पड़ने वाले विहंगम पहाड़, हरियाली भरा रास्ता तथा घाटियाँ बहुत ही आकर्षित करती हैं। मेरी राय है कि जब भी आप धौलाधार की वादियों में बसे पौराणिक कथाओं, वास्तुकला और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध भगवान शिव की नगरी बैजनाथ के विश्व विख्यात शिवमंदिर के दर्शन करने जाएं तो इस मंदिर में भी अवश्य महाकाल के दिव्य दर्शन कर लाभान्वित हों।

जन्माष्टमी

सीमा सहोता

सहायक लेखा अधिकारी



जन्माष्टमी, जिसे कृष्ण जन्माष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण हिन्दू त्योहार है जो भगवान श्री कृष्ण के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह पर्व भाद्रपद मास की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। हमारे देश में यह उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। मथुरा और वृन्दावन में यह उत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है, जहां भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था व बाल्य काल बीता था। इस दिन भक्तगण "दही हांड़ी" का आयोजन भी करते हैं।

शिमला में भी जन्माष्टमी का त्योहार बहुत धूम धाम से मनाया गया। शिमला के गंज बाज़ार में स्थित कृष्ण मंदिर को रोशनी तथा फूलों से सजाया गया तथा श्री कृष्ण के बाल रूप को सजा कर एक फूलों से सजे पालने में बैठाया गया। सभी भक्तगण बारी-बारी से झूले को झुला रहे थे। आधी रात तक कीर्तन का कार्यक्रम चला। मंदिर में आये श्रद्धालु कीर्तन तथा लड्डू गोपाल के मनमोहक रूप के दर्शन का आनंद ले रहे थे। रात्रि 12 बजे कृष्ण जन्म के पश्चात् धनिये की पंजीरी, मिष्ठान तथा माखन मिस्री प्रसाद के रूप में श्रद्धालुओं को वितरित किया गया। कुछ श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात् अपना व्रत खोला।

जन्माष्टमी का सबसे बड़ा सन्देश अधर्म पर धर्म की विजय है। कथाओं के अनुसार कंस ने अपनी सगी बहन व बहनोई – देवकी व वासुदेव को केवल इसलिए बंदी बना लिया था क्योंकि उसके स्वयं की मृत्यु अपने भांजे के हाथों निश्चित थी। परंतु दैव कृपा ऐसी थी कि कंस की अमानवीय मंशा फलीभूत न हो सकी और बाल गोपाल का जन्म हुआ। कहते हैं कि नियति को कौन टाल सका है और हुआ भी वैसा ही। कालान्तर में श्री कृष्ण के हाथों दुष्ट कंस का वध हुआ। श्री कृष्ण ने मानवता को सिखया की कितनी भी विषम परिस्थिति हो धर्म की रक्षा व अधर्म का नाश होना ही है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर हर बार यह कथा जीवंत हो उठती है। साथ ही, श्री विष्णु के इस अवतार की विभिन्न लीलाओं को भी जन्माष्टमी पर पुनः याद किया जाता है। गोपियों संग रासलीला हो, गोवर्धन पर्वत का उठाना हो, यशोदा मइया का निश्छल प्रेम हो, पंडालों में इन सभी को दर्शाया जाता है। परिवार जन नई पीढ़ी को कथाएँ सुनाते हुए इस तिथि की महत्ता समझाते हैं।

भगवान श्री कृष्ण अपने भक्तों के प्रति असीम प्रेम के लिए भी जाने जाते हैं। उनका राधा के प्रति प्रेम, गोपियों के साथ उनकी रासलीला और उनके मित्रों के साथ उनका स्नेह प्रेम का सर्वोत्तम उदाहरण है। जन्माष्टमी के दिन भक्त अपने आराध्य के प्रति भक्ति भाव प्रकट करते हैं और भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का गुणगान करते हैं। जन्माष्टमी का त्योहार भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण अंग है।

चीता : एक अदम्य भय अनुभव

गौरी शंकर

एम.टी.एस.



अचानक ढ़लान के निकट ऊपरी तरफ मेरे पीछे 10-12 फुट की दूरी पर झाड़ियों व घास में तेज सरसराहट की ध्वनि सुनाई दी। मुझे अंदेशा तो हो ही गया था पर फिर भी घूम कर नजर दौड़ाई। देखता हूँ तो भयंकर ध्वनि उत्पन्न करते हुए एक पूर्ण विकसित चीता, मेरी तरफ बढ़ते पाया।

इस मंजर को देख मेरे रोंगटे खड़े हो जाना तो स्वाभाविक ही था। मेरा मन, हृदय, आत्मा सभी काँप गए। भगवान की दया से इस अधेड़ उम्र में भी मेरे कदम भय के कारण सरपट तेज गति से भाग उठे। मुख से तेज चीखें निकल गईं।

14 अगस्त का सांध्य काल था। कार्यालय में कुछ देर हो जाने पर घर पहुँचने की जल्दी के कारण मैंने तेज चलने के साथ पगडंडी से जल्द घर पहुँचने का मार्ग चयन कर लिया था। सावन का महीना अंतिम पड़ाव पर था, चारों तरफ जंगल में घने घास, वनस्पति से आभा मण्डल सुन्दर होने के साथ-साथ अति सघनता मन को कुछ प्रफुल्लित व भय कर देने वाली स्थितियाँ पैदा कर देती है।

हमारा घर, जुब्बड़ हट्टी (एयर पोर्ट) के नीचे खलग गाँव में है। बरसात के कारण ढ़लान, फिसलन, हरियाली व वन की सघनता के कारण मैंने हल्का-हल्का दौड़ना आरंभ कर दिया ताकि यथावत घर पहुँच सकूँ।

अचानक ढ़लान के निकट ऊपरी तरफ मेरे पीछे 10-12 फुट की दूरी पर झाड़ियों व घास में तेज सरसराहट की ध्वनि सुनाई दी। मुझे अंदेशा तो हो ही गया था पर फिर भी घूम कर नजर दौड़ाई। देखता हूँ तो भयंकर ध्वनि उत्पन्न करते हुए एक पूर्ण विकसित चीता, मेरी तरफ बढ़ते पाया।

इस मंजर को देख मेरे रोंगटे खड़े हो जाना तो स्वाभाविक ही था। मेरा मन, हृदय, आत्मा सभी काँप गए। भगवान की दया से इस अधेड़ उम्र में भी मेरे कदम भय के कारण सरपट तेज गति से भाग उठे। मुख से तेज चीखें निकल गईं।

1 से 2 मिनट की दूरी पर लगातार भाग लेने पर अब गाँव के आरंभिक घर के निकट मैं आ गया था। भागते हुए मैंने पीछे देखा... तो चीता न था। चीते की परिधि पार कर चुका हूँ यह विश्वास नहीं था तो थोड़ी दूर और भागा। साँसे उखड़ रही थीं। अब तो चलने की स्थिति में भी नहीं था।

शीघ्र घर पहुँच कर अपना बैग फेंक कर मैं चारपाई पर हाँफते हुए लेटा। बात करनी मुश्किल हो रही थी। तभी पत्नी पानी का गिलास लाई, मेरी स्थिति मुख मण्डल पर आए भय को देख उसने पूछा, जी क्या हुआ?

मैंने इशारा कर कुछ रुकने को कहा, वह भी अब चिंतित सी नज़र आई। मुझे बदहवास देख उसकी चिंताएं बढ़ने लगीं। मैं बोलने की स्थिति में आऊँ वह उसकी प्रतीक्षा करने लगी।

कुछ पलों बाद मैंने अपनी वेदना सुनाई तो वह हाथ जोड़ प्रभु का धन्यवाद करने लगी व मुझे तसल्ली भी देने लगी। ऐसा लग रहा था मानो मेरी आपबीती से चीता दर्शन उसने भी कर लिया। भय की रेखाएँ उसके मुख पर भी स्पष्ट दिखलाई दे रही थी।

खैर बीतते लम्हे के साथ मैं भी सामान्य होता गया। रात को सभी बच्चे, भतीजे व भाई बार-बार मुझसे वही गुज़रा क्रम पूछने आते रहे व कुछ उस दृश्य मंजर पर हँसते हुए मज़ाक कर मुझे हँसाने का प्रयास करते रहे। पर सच कहूँ तो चीते के दर्शन के बाद का कोई पल याद नहीं। अब जब खतरा टल गया है तो यह सोच कर दंग होता हूँ कि मैं उस तेज गति से दौड़ कैसे पाया। क्या वो मैं ही था ?

आज 10 दिन बाद भी उस आपातकालीन तेज दौड़ के कारण मेरी मांसपेशियों में दर्द है। सच कहूँ – चीता यद्यपि सुन्दर तो होता है परन्तु उस का खौफ बहुत भयानक होता है। बस यह बात तभी सुस्पष्ट होती है कि “जिस तन लागे, वो तन जाने।”

हालांकि इस घटना को बीते दो सप्ताह गुजर चुके... परन्तु अब भी मैं एक अलग वेदना से गुजर रहा हूँ।

रात्रि में निद्रा क्रम में कुछ व्यवधान पड़ रहा है। सपने में, वह मंजर दूसरे-तीसरे रोज दिखाई क्यों देता है, समझ से तो परे है।

मुझे अति तेज दौड़ने के कारण शारीरिक दर्द अभी भी व्याप्त है।

कुछ मित्र व परिवारजन मिलकर व्यंग्य में यह पूछते हैं, कि चीता क्या दुबारा तो नहीं मिला, सुन कर कुछ क्षुब्ध होने पर भी खामोश ही रहता हूँ।



भाई : प्यार की इन्तेहाँ

पवन कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



उस्ताद श्री छज्जू राम की गणना शिमला के नामचीन हलवाई व पार्टियों वगैरह में विशिष्ट भोज बनाने वाले प्रथम पंक्ति कारीगर के रूप में होती रही है। ऐसा कहा जाता था कि अपनी शुरुआती उम्र में लाहौर से इस विशिष्ट पाक कला का आरंभ किया। फिर आजादी के बाद कुछ साल पठानकोट व बाद में शिमला की ऐतिहासिक नगरी उनकी इस कारीगरी व महारत की प्रशंसक व गवाह बनी। यहाँ शिमला में हलवाईयों में, नाथू राम, मेहरु राम, गुज्जर खान आदि मशहूर नामी दुकानदार रहे हैं।

इस परिमाण में उस्ताद छज्जू का आधारभूत ज्ञान व कला उन्नत थी। वह एक तरफ तो विवाह समारोह व अन्य विशिष्ट समारोह में तरह-तरह के व्यंजन भोज प्रस्तुति में अतुल्य थे। यह बताया गया कि पंडित जवाहर लाल नेहरु के शिमला दौरे पर, प्रशासन ने उन्हें कांगड़ी व्यंजनों के प्रस्तुतीकरण हेतु विशेष रूप से बुलवाया। बाद में तो मुख्य मंत्रियों, अन्य विशिष्ट राजनेताओं के निजी समारोह व विशिष्ट उच्च सेना अधिकारियों के समारोह में उन्हें अपनी कला की महारत के लिए विशेष न्योते मिलते ही रहे।

शिमला ही नहीं, हिमाचल के अन्य शहरों व कभी-कभार दूसरे राज्य में भी उनका यह दौरा चलता रहा।

मिठाई बनाने की कला में तो उनकी पकड़ अतुलनीय थी ही, शिमला में पेठा, पतीसा व फैनिया वह ही अकेले अपनी दुकान पर तैयार करते, जब कि अन्य दुकानदार यह मदें बाहर से मँगवाते।

इसके साथ ही फल व सलाद कटिंग से सुन्दर फूल व अन्य आकृति निर्मित कर देना व समारोह में व्यंजनों के प्रस्तुतीकरण को अन्य स्तर पर पहुंचा देने की कला उन में थी। मिठाइयों की कटिंग से सजावट व आकृति जैसे ताजमहल या शिमला का गिरजाघर बना देना, उन्हीं के ही बस की बात थी।

उपर वर्णित बहुमुखी गुणों में विशिष्टता होने के बावजूद उनकी सबसे बहुमूल्य व अतुलनीय खासियत यह थी कि उन का निज स्वभाव इतना कोमल, सरल, सहज, गरिमापूर्ण व वाणी मृदु, कि सामने वाला उनसे प्रेम सत्कार किए बिना रह ही न सकता था।

अंतिम कुछ रहस्यपूर्ण बात कि उस्ताद जी अंतर्मुखी व्यक्तित्व तथा गुरुमुखी थे। शायद इस ही की वजह से वह सभी जनों से नम्रता से प्रेम सत्कार करते। दूसरी ओर अपनी कारीगरी कला से मशहूर व मारुफ हो जाने पर भी गर्वाह व घमण्ड ता-उम्र उनके निकट से न गुजर पाया हो।

अपने छोटे भाई कुन्दन से उन्हें पुत्रवत् स्नेह व लगाव था। उस्ताद छज्जू जी का विवाह 1970 में हुआ था। कुन्दन जी तब पठानकोट में 8 वीं जमात में थे। कुन्दन जी ने दीना नगर कॉलेज से स्नातक डिग्री पास की व बहुत खुश हुए, चाव चढ़ गया था। आगामी 1-2 वर्ष तक कुन्दन जी नौकरी हेतु प्रयासरत रहे परंतु बात न बनी।

शिमला से सर्दियों में कुछ सप्ताह के लिए घर गए हुए थे तो उन्होंने अपनी माता जी से कुन्दन को अपने साथ शिमला में अपने व्यवसाय में जोड़ने की बात की और कुन्दन को शिमला ले जाने का आग्रह किया। माता जी व बुजुर्ग अनुभवी तो होते ही हैं। अपने पारिवारिक सदस्यों की सोच-समझ नियत सभी कुछ को अपने हृदय पटल पर संजोए हुए उनके कल्याण की प्रार्थना में लगे रहते हैं। यद्यपि बच्चे इससे अनभिज्ञ होते हैं। व छज्जू जी के छोटे भाई पर न्योछावर कर देने वाले प्यार, नियत से पूरी तरह वाकिफ़ थी। साथ-साथ अपनी बहु (श्रीमती छज्जू) के कुछ तत्त्व स्वभाव के भी।

चन्द मिनट बाद जब छज्जू जी ने माता जी को देखते हुए पुनः आग्रह किया तो वह इस बार बिना विलम्ब स्पष्टता से बोल उठी – “कि इसे शिमला ले जाने की बात तो ठीक है। पर इसका ध्यान रखने और उचित जिम्मेवारी उठा सकने का न्यायपूर्ण निर्वाह कर पाओगे।”

माता जी के इन वचनों में भावी चुनौतियों का परिदृश्य व एहसास छज्जू भाँप गए थे।

कुर्सी से खड़े हो गए, माताजी के आगे हाथ जोड़ बोले - “माताजी – यह मेरी जिम्मेवारी है। यदि कभी जीवन में ऐसा अवसर आया कि न्याय के पलड़े में कुन्दन व मेरा निज परिवार हो व कुन्दन का पलड़ा झुका हुआ हो, तो अपना परिवार छोड़ना पड़ा - छोड़ दूँगा – पर इसे न छोड़ूँगा।”

यह सुन माता जी के चेहरे पर कुछ गम्भीर भाव आ गए, आँखों में पानी-

जैसे छज्जू जी के भावी समय की उन्हें कुछ झलक दिख गई हो। छज्जू को अपने सीने से लगा लिया और दुआएं देने लगी। आँखें अश्रु न रोक पा रही थीं। छज्जू इस मातृ स्नेह से स्वयं अश्रुपूर्ण हो गए।

यह चन्द पल आगामी 25 से 30 वर्ष के उस प्यार की इन्तेहां की गहराई की सच्ची पटकथा लिख चुके थे। जिसका कुछ हल्का आभास माताश्री या छज्जू बस दोनों ही को था। या ईश्वर व समय के गर्भ में।

समय बीतता गया – छज्जू के परिवार में एक बेटी, 2 बेटे का जन्म हुआ।

कुन्दन जी के शिमला आ जाने से व्यवसाय विस्तार सहज हो गया। साथ ही छज्जू के शिष्य छोटू व जगीर सिंह (दोनों भाईयों) के लगन व मेहनत से तरक्की होती रही।

इस तरह कुछ समय बाद कुन्दन जी की शादी भी हो गई। उनके परिवार में एक बेटा-बेटी आ जाने से

परिवार मुकम्मल हो गया। बच्चे अपनी शिक्षा में व्यस्त थे। जीवन बहुत सहज व आनंदपूर्ण था। छज्जू व कुन्दन में अभूतपूर्ण प्यार व सत्कार था। शिमला शहर में छज्जू कुन्दन की ख्याति व सत्कार बढ़ता गया। जिससे संतोषवत कहा जा सकता है। मार्केट में सभी छज्जू जी का विशिष्ट सत्कार करते थे। वह भी सभी से बहुत मृदु भाषा में वार्ता करते।

छज्जू जी के परिवार में शिक्षा व अन्य आवाजाही हेतु साधनों की कमी न थी। साथ ही अब छज्जू साहिब आयु में 50 के करीब हो चले थे। उनके नेतृत्व में मेहनत-मुशक्कत का बोझ छोटू, जगीरा व श्री कुन्दन ने संभाल लिया था। साधनों की कुछ अधिक प्राप्ति के कारण शायद छज्जू परिवार यानि उनकी पत्नी, कुछ मितव्ययता के बजाय दिखावे पर खर्च लीन हो चली थी। साथ ही माता जी के समक्ष वो छज्जू की वचनबद्धता के घटनाक्रम का समय विभूत दस्तक दे रहा था।

छज्जू जी के घर में अब नित्य प्रायः इस बात पर क्लेश रहने लगा कि संयुक्त परिवार से कुन्दन को अलग किया जाए। छज्जू जी का शांत चित्त, मृदु स्वाभाव दूसरे पक्ष को शायद इस क्रम में और आंदोलित करने में सहायक रहा हो। उन्होंने बहुत समझाया, अलग-अलग उदाहरण दिए लेकिन सब व्यर्थ। सब भैंस के आगे बीन बजाने वाली बात साबित हो रही थी।

बहुधा साधन सम्पन्नता में जब पूरी टीम यानि कुन्दन, छोटू व जगीरा के श्रम में बड़ा हिस्सा था व उनके श्रम के अनुपात से कुछ अधिक एक वांछित प्रतिफल छज्जू परिवार को वित्त साधन के रूप में होने लगा तो उसका मूल्यांकन व प्रभु शुक्रिया के बजाय, अपने गर्व का सूत्रपात होने लगा तो क्लेश व बढ़ना, माता जी की भविष्यमयी-स्थिति-अनुमान करीब आने की आहट हो रही थी। छज्जू जी इस मानसिक द्वंद से बेहद दुखी व दो चार हो रहे थे। मार्केट व उच्च समारोह में इतनी इज्जत पाने वाला उस्ताद गृह क्लेश से आहत व मजबूर स्थिति में स्वयं को खड़ा पा रहा था।

आज दोपहर अपनी चारपाई पर व्याकुल और उदास बैठे उस्ताद छज्जू राम अपनी कला प्रवीणता, सही नियत, उचित न्यायपूर्ण सोच के रहते अपने निज परिवार संगिनी के हाथों पराजित जो हो गए थे। इसी मजबूरी के चलते अपने स्नेहवत छोटे भाई कुन्दन को अपने से अलग रहने का संदेश किस कठिनता से प्रकट कर पाए थे। शब्द भी तो जाने जैसे-तैसे बामुश्किल निकल रहे थे। मृदु ध्वनि में कुछ रुदन प्रकट हो रहा था।

कुन्दन जी के लिए नए किराए के मकान की व्यवस्था यद्यपि 30 मीटर की दूरी पर ही थी, नए मकान में कुर्सी पर बैठे पिता तुल्य बड़े भाई छज्जू का कुन्दन व उनकी पत्नी ने बहुत प्रेम व सहज भाव से ढाढ़स बँधवाने का प्रयास किया। हाथ जोड़ दोनों बोले – केवल 20-30 कदमों की ही तो दूरी है, यहाँ रह कर भी हम आप की ही छाया अनुकम्पा में हैं।

कुन्दन जी पुनः बोले, "भाभी जी के बार-बार आपके साथ क्लेश झगड़े पर अब विलम्ब लग जाएगा और सप्रेम कहा, आपने इस प्रकरण का अपने मन पर कोई बोझ नहीं लेना। आप जहाँ कहेंगे हमें जीवन भर वहीं खड़ा पाँँगे।"

कुन्दन जी की पत्नी ने उनके पैरों को हाथ लगाते हुए कहा - "पापा जी - दुनियादारी में ऐसी घटनाएँ घट ही जाती हैं, बहुधा सभी कुछ इंसान के बस में थोड़े होता है। पर हम दोनों और आप भी जानते हैं कि आपका हमारे प्रति स्नेह/प्यार में रक्ति भर कमी नहीं आएगी और आपके सत्कार आदर पहले से भी ज्यादा ही होगा। आपकी मजबूरी हम समझते हैं।"

छज्जू जी बोले - "ओ जीयो बच्चों, परमात्मा तुम्हें सदा खुश रखे।"

भारी मन से बोझिल कदमों से वापिस आकर कम्बल मुख पर ओढ़ कर अपनी चारपाई पर लेट गए। अब एकांत में अश्रु धारा को बहा देना चाहते थे। खण्डित हुआ मन रुदन कर रहा था। सहसा 20 वर्ष पूर्व माताजी के वो वचन - "कि कुन्दन को ले जाने की बात तो ठीक है, इसकी जिम्मेवारी लोगे क्या?" उनके हृदय पटल पर दस्तक देने लगे।

साथ ही अपनी प्रतिज्ञा कि "न्याय के पलड़े में कुन्दन का पक्ष भारी हुआ, तो अपनी गृहस्थी त्याग देगा।" इसके साथ माता का उनके चेहरे पर सहसा दृष्टिपात कर आँखें भर लेना, सभी पल भर में स्मृति से गुजर गया।

हृदय में पुनः निज हिम्मत सी जुटाई, 10 मिनट के इस अल्पविराम के बाद चप्पल डाली व मार्केट की तरफ चल दिए। राह में चलते हुए उन्हें आज विशेष एकांकीपन व बोझिल सा महसूस हो रहा था।

दूकान पर पहुँचे तो देखा कुन्दन, छोटू व जगीरा लगन सहित काम में व्यस्त हैं जिसे देख उनके मन का बोझ कुछ हल्का हुआ।

जगीरा को बोले - "यार, सोहनी सी चाय पिला।"

कुन्दन जी भी बोले - "जी, मैंने भी सुबह से चाय नहीं पी। पाजी मैं भी सोहनी सी चाय पिऊँगा।"

छज्जू जी बोले - "चलो सारे ही पी लेते हैं, अगर जगीरे से चाय सोहनी बन गई।"

चारों मिल कर कुछ हँसते हैं।

कुन्दन ने काम स्थगित किया, भाई के साथ बैठ गए। सभी चाय पीने लगे।

जीवन का कालचक्र तो गतिमान ही रहता है। अपने व्यवसाय के कार्य में छज्जू राम जुटे रहते व

इससे उनको प्यार, सत्कार, संतोष व अर्थ प्राप्ति तो होती ही रही। साल में 1-2 बार वह अपने परिवार जनों या कुन्दन-छोटू-जगीरा के संग अपने गुरुस्थली मध्य प्रदेश जाते ही जाते। गुरु पर उनकी अगाध श्रद्धा व गुरु की छज्जू पर अनुकम्पा थी।

परिवार की समय के साथ-साथ जिम्मेवारियाँ पूर्ण हो रही थी। बेटी को बहुत योग्य वर मिला व उसका विवाह कर दिया गया। दोनों बेटे भी कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने लगे थे।

इन सभी के साथ-साथ, उनकी संगिनी के व्यवहार और कुन्दन के परिवार के प्रति अविश्वास व क्लेश में कोई कमी न आई। देर-सबेर यह मुद्दा घर में वातावरण खराब कर देता। इसमें नए आयाम जोड़े जाते रहते। अब छोटे भाई के नापसंदी के प्रकरण को अपने निज रिश्तेदारों और पड़ोस-सहेलियों में भी फैला दिया था। फलतः ऐसी स्थिति में राय, परिवार तोड़ने वाली ही तो लोग देते हैं। स्थितियाँ अमूमन खराब ही होती हैं।

बहुधा समय-समय पर अनेक मर्तबा उस्ताद जी ने स्वयं अकेले भी अपनी पत्नी को इस विषय में समझने की कोशिश की, साथ ही क्यूँकर बच्चे बड़े हो चले थे उनके दरम्यान से इस विषय को क्लेश समाप्त कर आपसी प्यार के आत्मसात हेतु बात-चीत का प्रयास किया। यही नहीं, कुछ बुजुर्ग रिश्तेदार के मध्य भी इस बात को वाज़ीब समझाने की कोशिश की परन्तु कुछ लाभ न हुआ। वह स्वयं ही खण्डित हो रहे थे। नित्य टूटते रहे। शायद प्यार व स्नेह जितना गहरा व पवित्र हो उसकी परीक्षा भी उतनी जटिल होती है। तैरने वाले को डूब कर मंजिल पार करनी पड़ती है।

अब उस्ताद जी की उम्र व शरीर की कमजोरी व मानसिक उपक्रमों ने कुछ हताश व बोझिल करना आरंभ कर दिया था।

मार्केट के एक-दो सहयोगी दुकानदारों से उन्होंने इस प्रकरण पर चर्चा की – उन्होंने अपनी कुन्दन के प्रति न्याय युक्त जिम्मेवारी का पक्ष भी बताया। आगामी दिनों में उन्होंने निकट के सहयोगी दुकानदार शर्मा जी के साथ कोर्ट के पेपर तैयार करवा दिए, जिस पर किराए के मार्केट स्थित दुकान पर अब संयुक्त साझेदारी, छज्जू राम व कुन्दन लाल की मान्य कर दी गई। तथा उनके न रहने पर पूरी इख्तियारी कुन्दन लाल जी की होगी, सुस्पष्ट किया गया था। अगले दिन दोपहर, इस बारे में, कुन्दन से कुछ बात की व पेपर में दिखवाने का प्रयास किया। कुन्दन जी ने उन्हें कागजात लौटाते हुए, ऐसा न करने की बात कही।

उन्होंने कहा, “तुमने मेरी जिंदगी भर बात मानी है, यह एक भविष्य के उपचारात्मक जरूरी कार्यवाही है। आज मैं शर्मा जी के साथ जा कर इसका पंजीकरण सुनिश्चित कर दूँगा। भविष्य के गर्भ में क्या है। अतः इस प्रकरण को मेरे-तुम्हारे सिवाय या शर्मा जी के अतिरिक्त किसी को जानकारी नहीं है। आगे भी न ही हो यह ध्यान रखना।”

समय की गति चलती ही रही। उस्ताद जी का निजी जीवन में उतार-चढ़ाव, कला-क्लेश के बादल आते रहे, अब वो खामोश साक्षी भाव से देखते व सुनते रहते। कभी-कभार ही उचित मार्गदर्शन हेतु समझाने लगते। संगिनी के इस अविरल क्लेश की छाया दोनों बेटों के संस्कारों पर हल्की-फुल्की नज़र आने लगी। जिस की पीड़ा से उस्ताद जी बहुत दुखी व मार्मिक हो जाते।

वर्ष 2000 में गर्मियों की सुबह, उस्ताद छज्जू सुबह, 5:30 बजे गोल पहाड़ी जा कर एकान्त में कुछ व्यायाम व सैर के साथ नाम सुमिरन कर आते। आज कुछ प्रभु को और ही मंजूर था। सैर की यह यात्रा हृदय गति रुकने से परम धाम की यात्रा में परिणत हो गई। जैसे ही उनके परिवार जनों, अनुज कुन्दन, शिष्य छोटू-जगीरा को पता चला दौड़-धूप की गई, अस्पताल ले जाया गया, परन्तु वह तो अब तक अपनी पेशानी (माया) उठाए अपनी माताश्री के सान्निध्य में बैठे, उनकी गोद में सिर धरे, इस मृत्युलोक की कठिन वेदना निर्णयों के बीच, फँसे रहते हुए, अब उनसे अपने निर्णयों की जाँच-परख करवा रहे हों और माफी की प्रार्थना कर रहे हों।

आज माताश्री का मुख मंडल सहज, व शान्त था जैसे वह कदाचित कह रही हो, वत्स डगर कठिन नहीं दुर्गम थी, पर तुम्हारे सच्चे निःस्वार्थ प्यार की सच्चाई ने सभी बंधन काटे व पार किए। सच में वत्स, तुम खाने, मिठाई बनाने के ही नहीं, मानवीय मूल्य, प्यार सच्चाई के भी तो उस्ताद हो। “कल्याण हो वत्स।”



मंजिल की तलाश

हेतराम जसपाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



हिमाचल प्रदेश राज्य के मंडी जिले की सुकेत रियासत जो अब तहसील सुन्दरनगर के नाम से विख्यात है, से पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर छोटे-बड़े पहाड़ों से घिरे हुए एक छोटे से गाँव नालू में 03 जून सन 1965 को एक अत्यंत ही गरीब परिवार में मेरा जन्म हुआ। परिवार में पांच सदस्य होने और गरीबी के चलते मुझे स्कूल में देरी से भेजा गया क्योंकि गाँव से स्कूल जाने वाला साथ में और कोई लड़का या साथी नहीं था। जैसे-तैसे दसवीं तक की शिक्षा गाँव के ही सरकारी स्कूल से पूर्ण की। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए हम दो भाइयों को चाचा जी के भरोसे मंडी कॉलेज में भेज दिया गया। हमने अच्छी मेहनत की लेकिन मैं पी.यू.सी. में अनुत्तीर्ण हो गया। मेरे अनुत्तीर्ण होने की खबर जब मेरे गाँव मेरे माँ-बाप को दी गई तो उनको यह बताया गया कि मैंने सही ढंग से पढ़ाई में ध्यान ही नहीं दिया और आवारागर्दी करता रहा इसलिए फेल हो गया। ऐसी खबर सुनकर पिता जी को बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि साल भर का खर्च बर्बाद हो चुका था। मैं जब गाँव अपने घर गया तो पिता जी ने गुस्से में मुझको न केवल खरी-खोटी सुनाई, आगे पढ़ाने से भी इंकार कर दिया.... यहाँ तक कि गुस्से में आकर मुझे घर से भी निकाल दिया। मैं उस दिन पागलों की तरह गाँव में इधर-उधर भटकता रहा लेकिन गाँव में भी किसी ने मुझको पनाह नहीं दी। तब मुझे लगा कि अब आगे का जीवन बहुत कठिनाई भरा होगा।

पिता जी ने आगे की पढ़ाई करवाने से साफ़ इंकार कर दिया था लेकिन मेरे मन में आगे और पढ़ाई करने की एक अभिलाषा/उत्कंठा थी। इस अभिलाषा को पूरा करने के उद्देश्य से मैं अगली सुबह ही अपना गाँव छोड़ कर शहर की ओर निकल पड़ा। मन में बस यही भाव था कि मैं शहर में जाकर कोई-न-कोई छोटा-मोटा काम करके अपनी पढ़ाई को जारी रखूंगा, यहाँ गाँव में रहूँगा तो हर दिन ताने और गालियों के सिवाए कुछ नहीं मिलने वाला। शहर में आकर मैं समस्त दुकानदारों, व्यापारियों, ढाबो-होटलों इत्यादि सभी लोगों के यहाँ मित्रता कर-करके काम मांगता रहा लेकिन किसी ने भी कोई काम नहीं दिया और न ही ठहरने के लिए कहीं कोई ठीकाना मिल सका। कुछ दिन तक तो मैं अपने एक दोस्त के पास रुका रहा और साथ ही काम की तलाश भी करता रहा परन्तु कोई कामयाबी नहीं मिल पाई। अंततः एक दिन मैं थक-हार कर उदास-हताश होकर नाउम्मीद हो गया। मुझको अपने भविष्य में आगे केवल अंधकार दिखाई दे रहा था। मैं अन्दर ही अन्दर पूरी तरह से टूट चुका था... न तो ऐसे में मैं अपने गाँव वापिस जा सकता था और न ही बिना काम और आश्रय के शहर में रह सकता था।

एक दिन इसी जद्दोजहद में उलझकर शाम के समय मैं दुःखी मन लेकर शहर से दूर एक सूनसान सड़क पर बिना कुछ विचारे निकल पड़ा। चलते-चलते शहर से बहुत दूर व्यास नदी के किनारे जा पहुंचा। वहाँ एकांत बातावरण में नदी के किनारे एक चट्टान पर बैठ गया और कल-कल बहते हुए पानी के बहाव को निहारता रहा। मेरी आँखों से बरवस झर-झर आंसू झरने लगे... आँखों के सामने घुप्पअंधेरा छा गया...मन में बस अब एक ही ख्याल जोर पकड़ने लगा कि क्यों न नदी में कूद कर इस दुनिया को अलविदा कह दूँ।

जैसे ही मैं नदी में छलांग लगाने के लिए तैयार हुआ उसी समय किसी ने पीछे से मुझे कमीज के कॉलर से पकड़ते हुए पीछे की ओर खींच कर डांटते हुए ऊंचे स्वर में कहा-“हे! मूर्ख, यह क्या करने जा रहा है, अपने इससुंदर जीवन को क्यों व्यर्थ में समाप्त कर रहा है?” मैंने जब मुड़कर पीछे की ओर देखा, तो बस देखता ही रह गया। मेरे सम्मुख गेरुआं लिवास यानि धोती-कुर्ता पहने, कंधे पर पीले रंग का गमछा, ओजस्वी मुख-मंडल लिए एक साधू भेष में सज्जन व्यक्ति खड़े थे और उन्होंने मुझे पकड़ रखा था। इससे पहले कि मैं उनसे कुछ कह पाता, उन्होंने ही मुझे बड़े प्यार से समझाते हुए कहा-“बेटे मैं बड़ी देर से तुम्हारे पीछे खड़े होकर तुम्हें बड़े ध्यान से देख रहा था, तुम बड़े परेशान, उदास किसी उधेड़-बून में उलझे हुए बरवसरोए जा रहे थे, ऐसी कौन सी परेशानी, या कारण है जिसके लिए तुम ऐसा कायरता भरा कदम उठाने जा रहे थे।” मैं चुप खड़ा रहा, मुझसे कुछ भी कहने को नहीं बन पा रहा था। वह सज्जन व्यक्तित्व पुनः मेरा सर सहलाते हुए समझाने के अंदाज में कहने लगे -“देखो बेटा, बात हमेशा याद रखना, जीवन से निराश हो कर हिम्मत हार देना तो कायरता का काम है, संकट, दुख-दर्द, विफलता, अपमानता, विवशता तो मनुष्य के जीवन की कसौटियां होती हैं, उनका डटकर सामना करना ही जीवन को सुदृढ़ता एवं मजबूती प्रदान करता है। इनसे भागना, हार मानकर निराश हो जाना कमजोर मनुष्य की निशानी है। मनुष्य जीवन तो उस भगवान का दिया हुआ एक खूबसूरत सा उपहार है, इसमें प्रेम है, अनुराग है, दुःख-सुख, उतार-चढ़ाव, सफलता-विफलता, आशा-निराशा सब कुछ सम्मिलित है। बेटे जीवन को परमात्मा का आशीर्वाद मानकर जीकर देख, तुझे सफलता अवश्य मिलेगी।” इतना कह कर वह सज्जन व्यक्तित्व मुझको आशीर्वाद देकर वहाँ से प्रस्थान कर गए और क्षणभर में ही आँखों से ओझल हो गए। मैंने उन सज्जन व्यक्तित्व की कही बातों को बड़े ध्यान से सुना, उन बातों ने मेरे मन में एक विश्वास की चिंगारी प्रज्वलित कर दी...चेहरे पर आत्म-विश्वास की आभा उभरने लगी... मुझको अन्दर-ही-अन्दर एक असीम शान्ति और सुकून भरा एहसास महसूस होने लगा। उससे मुझे एक सीख भी मिल गई कि-

“जिन्दगी तो एक दर्द भी है, हर-हाल में इसको सहन करना पड़ेगा,

कठिनाइयां कदम-कदम पर आएंगी, हर-हाल में उनसे लड़ना पड़ेगा।”

उन सज्जन व्यक्तित्व की कही बातों ने मेरे मन-मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव ही नहीं डाला अपितु मेरे आत्म-विश्वास में भी वृद्धि हुई, जिससे मेरे पूरे शरीर में मानो नए खून, नए जोश का संचार हो गया...टूट

चुकी हिम्मत पुनः जागृत हो ऊठी...मुझे जीने की एक नई रोशनी दिखने लगी। मैं अगली सुबह पुनः काम की तलाश के लिए शहर की ओर निकल पड़ा। उस दिन थोड़ी सी कोशिश के उपरांत मुझको एक मजदूरी का काम मिल ही गया और शाम होते-होते मुझे सर छिपाने के लिए चालीस रूपये के मासिक किराए पर एक कमरा भी मिल गया। इस प्रकार शहर में ठहरने का मेरा प्रबंध हो ही गया। उस दिन मैं बहुत ही खुश था। लेकिन मजदूरी जैसा काम मुझे लगातार रूप से मिल पाना कठिन हो रहा था। कुछ महीनों तक मैं छोटी-मोटी मजदूरी का काम करके अपना गुजारा करता रहा परन्तु मजदूरी के साथ पढ़ाई कर पाना संभव नहीं लग रहा था, सोचा क्यों न कोई अन्य काम ढूंढा जाए जहाँ मुझे कुछ समय के लिए आराम मिल सके।

यह बात नवंबर 1984 की है, एक दिन यूँ ही मैं एक दूकानदार (सेठ) के यहाँ काम पूछने चला गया, वह एक परचून विक्रेता की दूकान थी और दूकानदार को भी एक हैल्पर की जरूरत थी। उनसे बात करने पर कुछ शर्तों के साथ बात बन गई और उन्होंने मुझे तीन सौ रूपये महीने की पगार पर काम पर रख लिया। यह काम पाकर मैं बहुत खुश हुआ और राहत सी महसूस करने लगा क्योंकि इतने पैसों से मेरा गुजारा बड़ी आसानी से चल सकता था। मैंने बड़ी ईमानदारी और लगन से इस काम को किया और शीघ्र ही इसमें पारंगत हो गया। साथ ही मैंने अपनी पढ़ाई को भी जारी रखा। ग्राहक ही नहीं बल्कि सेठ भी मेरे काम से बहुत खुश थे लेकिन यहाँ मुझको सामाजिक विषमता एवं कुरीतियों का सामना करना पड़ा जो कि मेरे लिए बहुत कष्टदायक समय रहा तथा इससे मुझमें एक संकुचाहट की भावना ने घर कर लिया जिससे मैं अब तक जूझता रहा हूँ। फिर भी मैंने उसी सेठ के यहाँ काम करना जारी रखा और अपनी पढ़ाई को भी जारी रखा।

एक दिन मैं छूट्टी के दिन अपने कमरे में बैठा कुछ सोच-विचार कर रहा था कि तभी बाहर से आवाज आई-“जय-शिव भोले”, मुझे वो आवाज जानी-पहचानी सी लगी, मैं जल्दी से दरवाजा खोल कर बाहर की ओर देखने लगा, सामने वही साधू बाबा खड़े हुए थे। मैंने उनको प्रणाम किया और उनको आदर-सत्कार के साथ कमरे में चलने को कहा, साधू बाबा बिना कुछ कहे मेरे साथ कमरे की ओर चल पड़े। मेरे कमरे में आकर पहले तो कुछ देर तक खड़े होकर कमरे की चारों दिशाओं में निहारते रहे, फिर कमरे की सुव्यवस्था, साफ़-सफाई और मेरे रहने के साधारण से ढंग को देख कर मन-ही-मन बड़े खुश होकर कहने लगे-“बेटा! तुम्हारे काम की लगन के साथ-साथ तुम्हारे रहने का ढंग भी अच्छा लगा। आज बाबा जी तुम्हारे हाथ के बने हुए भोजन का स्वाद चखना चाहते हैं। क्या बाबा जी को भोजन करवाएगा।” मैंने बड़े कृतज्ञतापूर्वक कहा, “क्यों नहीं बाबा जी, अवश्य कराऊंगा, यह तो मेरी खुशनसीबी होगी कि आप स्वयं मुझ जैसे साधारण से लड़के के हाथों से बना हुआ भोजन करेंगे।” ऐसा कहकर मैं ताजा खाना भी बनाने लगा और साथ में बाबा जी से बातें भी करने लगा। मैंने बाबा जी से कहा “बाबा जी, बुरा न मानो तो एक बात पूछूँ” इस पर बाबा जी ने हंसते हुए कहा-“क्यों नहीं! अवश्य” मैंने पूछा “आप यहाँ कहाँ रहते हो और भिक्षा माँगने कहाँ-कहाँ जाते रहते हो?” बाबा जी ने बताया कि “मैं यही शहर के साथ ही शिव-भोले के मंदिर के पास एक कुटिया में रहता हूँ और शहर में हर सप्ताह केवल वीरवार के दिन ही इक्यावन घरों से ही भिक्षा माँगता

हूँ।" इस दौरान खाना भी बनकर तैयार हो गया, मैंने बाबा जी को बड़े प्यार से भोजन करवाया। बाबा जी ने बड़े प्यार से भोजन किया और खुश होकर ढेरों आशीर्वाद देते हुए कहने लगे- "बेटा! हमेशा खुश रहा करो, शिव-भोले की कृपा हमेशा तुम पर बनी रहेगी...यह मेरा आशीर्वाद है।" यह आशीर्वाद देकर बाबा जी वहां से चले गए। बाबा जी की बातें मेरे अंतर्मन को छू गईं, उस दिन मैं दिनभर बहुत खुश रहा।

इससे ठीक विपरीत गाँव में मेरे माता-पिता को मेरी कोई चिंता नहीं थी, मेरे बारे में उनके कानो में रिश्तेदारों ने इतना जहर जो घोल रखा था कि वो लोग मेरा चेहरा तक देखने को तैयार नहीं थे। उन्होंने मेरे बारे में मां-बाप को यहाँ तक बता रखा था कि मैं शहर में आवारा लड़कों के साथ घूमता-फिरता रहता हूँ और आवारागर्दी के सिवाए कुछ नहीं करता। यह तो मेरा दिल ही जानता था कि मैं जिन्दगी में कैसे-कैसे थपेड़े खा कर अपना गुजर-वसर कर रहा था.. दिल से एक टिस सी उठती रहती...

“जिन्दगी के थपेड़ों ने, अपने-पराए हर लूटेरों ने,
मेरी जिन्दगी को झंझोड़ रखा था, मुझे तकरीबन तोड़ रखा था,
मगर हारा नहीं हौसला मैंने, हर कठिनाई से लड़ता गया
न जख्म, न दुःख-दर्द की चिंता, बस अपनी राह पर बढ़ता गया”

दो वर्ष मेहनत-मजदूरी करते हुए मैंने कुछ बचत कर ली थी। इसलिए दो साल बाद मैंने गाँव से अपने छोटे भाई को भी शहर में पढाई के लिए अपने पास बुलाया। उस समय मेरे माता-पिता को कुछ मामूली सा एहसास हुआ कि नहीं, शहर में बेटा कुछ नकुछ काम तो अवश्य कर रहा होगा। हम दोनों भाइयों ने ग्रेजुएशन तक की पढाई कई परेशानियों को झेलते हुए आखिरकार अप्रैल 1989 में पूरी कर ही ली। ग्रेजुएशन की पढाई पूरी करने के बाद भाई को एम.एस.सी. की पढाई के लिए हिमाचल प्रदेश, यूनिवर्सिटी, शिमला भेज दिया।

मैं अगले दो वर्षों तक शहर में ही मेहनत-मजदूरी का काम भी करता रहा और अपनी एम.ए. (राजनीति शास्त्र) की पढाई भी करता रहा। इसी दौरान मुझे भारतीय जीवन बीमा कम्पनी से 85 दिनों के लिए अस्थाई नौकरी का कॉल लैटर प्राप्त हुआ, जिसे मैंने सहर्ष ही स्वीकार कर लिया। इस नौकरी से मेरी एम.ए. की पढाई को पूरा करने में बड़ी सहायता मिली। इसी दौरान कॉलेज के कई लड़के भी अब मेरे दोस्त बन चुके थे। एक दिन ऐसे ही हंसी-मजाक में मेरे एक दोस्त ने कहा – “भाई ! आजकल शहर में कॉलेज के ही लड़कोंद्वारा स्थानीय भाषा में एक नाटक का मंचन किया जा रहा है, जिसके लिए कुछ लड़कों की जरूरत है, चलो ट्राई करते हैं।” मैं यून ही वहां चला गया और सौभाग्यवश उस नाटक के लिए मुझे चुन भी लिया गया। इस नाटक का मंचन राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के सौजन्य से भारत के दूसरे राज्यों में किया जाना था। इसमें विशेष बात यह थी कि नाटक में भाग लेने वाले प्रत्येक कलाकार को दो सौ पचास रूपये प्रति दिन के हिसाब से दिए जा रहे थे और यह दौरा पंद्रह दिनों का निर्धारित

किया गया था। इससे मुझे एक नई ऊर्जा मिली और मैं सामाजिक रूप से काफी हद तक अपने आत्मविश्वास को बटोर पाने में कामयाब रहा।

पोस्ट-ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी करने के एक वर्ष तक मुझको पुनः कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मेरी किस्मत भी मेरे साथ आँख-मिचौली वाला खेल खेलती रही, ऐसा लगता था कि न जाने अभी और कितनी परीक्षाओं से गुजरना बाकी था। अब भी मुझको कई प्रकार के काम करने पड़े, जैसेकि दैनिक मजदूरी, कुलीगिरी, ठेकेदारी पर काम, कच्चे-पत्थर के डंगे लगाना और राज-मिस्त्री के साथ हैल्पर का काम करना इत्यादि क्योंकि दुकानदार के यहाँ मैंने काम करना छोड़ दिया था। परन्तु अब कॉलेज के लड़के जो मेरे दोस्त बन चुके थे, उनमें से कई दोस्त मेरी कड़ी मेहनत और पढ़ाई की प्रशंसा भी किया करते क्योंकि मैं कभी-कभार पढ़ाई के मामले में उनकी मदद भी करता रहता था, इसलिए मेरे दोस्त भी जरूरत पड़ने पर कभी-कभी मेरी हल्की-फुल्की मदद कर दिया करते।

मेरे ऐसे हालात का पता जब मेरे एक दोस्त को चला तो उसने मेरी मदद के लिए बाजार में ही ढाबा चलाने के लिए एक दुकान किराए पर दिलवाने का आश्वासन ही नहीं दिया बल्कि मुझको साथ लेकर उस दुकान के मालिक से मिलवा भी दिया और दुकान मालिक को मुझे दुकान किराए पर देने के लिए राजी भी कर लिया। मुझको अब केवल दुकान के मालिक को एक सप्ताह के अन्दर एक महीने का किराया एडवांस के रूप में देना था। मैं एक बार फिर बहुत खुश था, मुझको विश्वास सा हो गया था कि अब मैं मुफलिसी की जिन्दगी नहीं जीऊँगा। लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था। उसी दिन शाम (10 अगस्त 1992) को मुझे हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी से एम.फिल. के लिए कॉल लैटर आ गया जिसके परिणामस्वरूप मेरी पूरी जिन्दगी ने एक सुनहरी करवट ली। कॉल लैटर आने के एक सप्ताह में ही मुझे एम.फिल. (राजनीति शास्त्र) की एडमिशन के लिए यूनिवर्सिटी के लिए शिमला आना था। उस समय में भी मेरे पास इतना पैसा नहीं था कि मैं एम.फिल. की एडमिशन के लिए शिमला आ पाऊँ। इस समय मेरे नाटक ग्रुप के एक दोस्त महेश भाई ने मेरी पैसों से इतनी मदद कर दी कि मैं अपनी एडमिशन कर पाया, लेकिन इसके आगे फिर वही परेशानी आँख बिछाए सामने खड़े हो गई- शिमला जैसे शहर की यूनिवर्सिटी में एम.फिल. की पढ़ाई के लिए खर्च ऊठा पाना कैसे संभव हो पाएगा, यह चिंता सताने लगी। यूनिवर्सिटी में हमें बॉयज होस्टल में कमरा न० 27-सी अलॉट हुआ। मैं इसे पाकर तो बहुत खुश था लेकिन चिंता वही थी कि आगे का खर्च कैसे उठाऊँगा?

उन दिनों होस्टल में मेस निरंतर नहीं चलती थी—कभी बंद हो जाया करती, हमने देखा, होस्टल में कई लड़के चुपके से अपने-अपने कमरों में खाना बना लिया करते थे और जो घर से रईस खानदान से थे वे लोग ढाबो या फिर रेस्टोरेंट में अपने खाने का प्रबंध कर लिया करते थे। कुछ लड़के ऐसे भी थे जिनको घर से इतना भी पैसा नहीं मिल पाता था कि वे प्रति-दिन बाहर से खाना खा सके। यह देखकर मेरे मन में एक योजना ने जन्म लिया कि क्यों न चार-पांच अपने करीब के साथियों का खाना होस्टल के कमरे से ही एक मिनी मेस के

रूप में बनाना शुरू किया जाए जिससे पढ़ाई के लिए भी कुछ जुगाड़ हो सके। मैंने चार-पांच साथियों से बात की और उनके लिए खाना बनाना शुरू कर दिया। ऐसे मैंने अपनी तथा अपने भाई की पढ़ाई के खर्च का जुगाड़ कर लिया। इसी दौरान अनेक दोस्त ऐसे भी मिले जो पढ़ाई के साथ-साथ नौकरी की तलाश के लिए कई परीक्षाओं के लिए आवेदन करते रहते थे, ऐसे में ही एक दिन यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में 11 दिसंबर 1992 को एक दोस्त मस्ताना ने मुझसे कहा- "भाई, आजकल एस.एस.सी. ने ग्रेजुएट लेवल की एक परीक्षा के लिए आवेदन-पत्र आमंत्रित किये हैं, चलो उसके फार्म भर कर भेज देते हैं।" उसकी बात मानते हुए मैंने भी फार्म भरकर भेज दिया और जुलाई 1993 को संजौली कॉलेज में इसकी परीक्षा दी।

आगे का समय होस्टल की मेस के सहारे हंसी-खुशी निकल रहा था और पढ़ाई-रिसर्च का कार्य भी ठीक चल रहा था, 20 दिसम्बर 1993 को मैंने अपनी एम्.फिल. की थीसिस का कार्य पूर्ण करके थीसिस को सबमिट भी कर दिया। मेरे रिसर्च कार्य से मेरी गाइड प्रभावित ही नहीं अपितु बेहद खुश भी थी क्योंकि मैंने अपनी थीसिस हस्तलिखित रूप में प्रस्तुत की और अपने बैच के 45 सहपाठियों में से सबसे पहली थीसिस मेरी ही सबमिट हुई थी। अब मन में एक एहसास सा हो गया था कि अब गर्दिश से जिन्दगी बाहर निकल चुकी है। अपनी एम.फिल. की पढ़ाई अब पूर्ण कर मैंने आगे पी.एच.डी. में भी एडमिशन ले ली। छोटे भाई ने भी अपनी एम. फिल. (केमिस्ट्री) की थीसिस मार्च 1994 में सबमिट कर दी।

मार्च 1994 में हम दोनों भाइयों को सरकारी नौकरी लगने का शुभ समाचार प्राप्त हुआ। मेरे भाई की पहले स्कूल कैडर के लेक्चरार की नौकरी में सिलेक्शन हुआ, जो एक वर्ष बाद कॉलेज कैडर के लेक्चरार में भी सेलेक्ट हो गया और मुझको कार्यालय महालेखाकर (लेखापरीक्षा), हि. प्र., शिमला में लेखापरीक्षक के पद पर नियुक्ति का समाचार प्राप्त हुआ जिसका नियुक्ति पत्र मुझे अक्टूबर 1994 में मिला। हम बेहद खुश थे और इस मौके पर मुझको उस बाबा जी की याद आना स्वभाविक ही था जिसने मुझे कामयाबी का आशीर्वाद दिया था, मैं यह खुशखबरी बाबा जी को देने के लिए मंडी के लिए निकल पड़ा। मैं उस जगह जा पहुंचा जहां बाबा जी ने मुझको अपने ठहरने की कुटिया बताई थी, वहां पहुँच कर मैंने इधर-उधर बहुत ढूँढा परन्तु मुझको वहाँ पर न तो कोई कुटिया दिखाई पड़ी और न ही किसी बाबा के दर्शन हो सके। वहां पर शिव भोले का बहुत पुराना मंदिर है, जिसे मंडी के स्थानीय लोग पंचवक्र के नाम से पुकारते हैं। मैंने वहां पर आस-पास पूछताछ की तो उन्होंने बताया कि यहाँ तो कोई बाबा नहीं रहता था। मैं यह सुनकर हैरान था। मैं इस सोच में पड़ गया कि फिर वो कौन थे जो शहर में मेरे पास मेरे कमरे में आया करते थे। मैं काफी देरतक शिव-भोले के उस मंदिर के एक कोने में बैठा रहा और शिव-भोले का मन-ही-मन सिमरन और धन्यवाद करता रहा। सच ही तो कहा है कि जिसका कोई नहीं उसका तो खुदा (भगवान) होता है। अगर लगन सच्ची हो और मन में अटूट विश्वास हो तो शिव-भोले स्वयं किसी रूप में सहारा बन जाया करते हैं।

मुझे और मेरे दोस्तों को हमारी नौकरी लगने की बेहद खुशी थी क्योंकि मेरी जिन्दगी अब सचमुच बदल चुकी थी, गर्दिश की दलदल से हम बाहर आ चुके थे। मैंने 15 नवम्बर 1994 को कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हि.प्र., शिमला में लेखापरीक्षक के पद पर अपनी नौकरी ज्वाइन की। मुझे प्रशासन-1 अनुभाग में ही तैनात किया गया, इस अनुभाग में मैंने प्रशासन से सम्बंधित कार्य सीखे। नौकरी लगने के दो-तीन महीने के भीतर ही मुझको अपना जीवन साथी भी मिल गया। इस नौकरी के दम पर मैंने शिमला जैसे शहर में अपना एक छोटा सा आशियाना भी ले लिया। प्रशासन अनुभाग से ही मैंने एस.ओ.जी.ई. की परीक्षा पास की तथा 07 जून 2007 को अनुभाग अधिकारी के पद पर पदोन्नत होने के बाद मुझे राजस्व क्षेत्र के ए.आर.सी. अनुभाग में तैनात किया गया। जीवन में एक बेटे का भी पदार्पण भी हो गया।

इस प्रकार जिंदगी में कितने मोड़ आएंगे ये हमारे बस में नहीं है परन्तु विश्वास रख कर कर्म करते रहने से हम एक न एक दिन मंजिल पर अवश्य पहुंचते हैं।



झरोखा 2023-24

विगत हिन्दी-पखवाड़े के बाद कार्यालय में बहुत सी गतिविधियां हुईं। आइए झांकते हैं यादों के झरोखे से-

लेखापरीक्षा सप्ताह 2023:

16 नवम्बर 1860 में पहले नियंत्रक-महालेखापरीक्षक ने पदभार ग्रहण किया था। इसकी स्मृति में मनाए गए तृतीय लेखापरीक्षा सप्ताह का शुभारंभ मुख्यालय, नई दिल्ली में भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया। इसके अंतर्गत कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं राष्ट्रीय लेखा व लेखापरीक्षा अकादमी ने मिल कर 19 से 24 नवम्बर 2023 तक लेखापरीक्षा सप्ताह का आयोजन किया। इस साप्ताहिक कार्यक्रम का आरम्भ 19 नवम्बर को वाक-ए-थॉन से हुआ। जिला खेल अधिकारी, शिमला, श्री अनुराग वर्मा के नेतृत्व में रिज मैदान, शिमला से भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान तक वाक-ए-थॉन किया गया।





इसी कड़ी में दिनांक 21 नवम्बर को पंचायती राज संस्थान और स्थानीय सरकार के प्रतिनिधियों को उनकी उपलब्धियों पर सम्मानित करने के लिए एक अभिनंदन कार्यक्रम कार्यालय भवन,गोर्टन कैसल में रखा गया। बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की स्थानीय निधि लेखा समिति के सभापति श्री इंदर दत्त लखनपाल ने। इस अभिनंदन कार्यक्रम में ग्राम पंचायत हिमरी की प्रधान, श्रीमती पूनम सूर्यवंशी एवं नगर पंचायत सुन्नी के अध्यक्ष श्री प्रदीप शर्मा को उनकी

उपलब्धियों पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर लेखापरीक्षा सप्ताह के अंतर्गत शहर के स्कूली बच्चों के लिए रखी गई निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली सेंट थॉमस स्कूल की कक्षा नौवीं की छात्रा कुमारी खुशी ठाकुर को भी सम्मानित किया गया।



शिमला शहर के व्यस्ततम रिज मैदान में दिनांक 22 नवम्बर को रक्त-दान शिविर लगाया गया, जिससे एक तरफ जहाँ नगरवासी लेखापरीक्षा विभाग से रूबरू हुए ..उसके प्रति जागरुक हुए वही दूसरी ओर विभाग ने लगभग 100 यूनिट रक्त का दान किया।





नवम्बर की 28 से 30 तिथि तक भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग – इंटर जोनल टेबलटेनिस टूर्नामेंट का आयोजन इंदिरा गाँधी खेल परिसर, शिमला में किया गया गया, जिसमें नार्थ जोन से आठ टीमों ने भाग लिया। ये आठ टीमों थीं- तेलंगाना, रायपुर, पंजाब, मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई और भुवनेश्वर की। इसी क्रम में दिनांक 1 व 2 दिसम्बर को 40 और 50 से अधिक उम्र वाले खिलाड़ियों के लिए वेटेरन टेबल टेनिस टूर्नामेंट भी रखा गया।

माननीय मुख्य न्यायाधीश, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय, न्यायमूर्ति श्री एम.एस. रामचंद्र राव जी ने इस टूर्नामेंट के समापन पर विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया।



इंटर जोनल टेबलटेनिस टूर्नामेंट (नॉर्थ जोन)

गणतंत्र दिवस समारोह:

26 जनवरी को कार्यालय में गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। प्रधान महालेखाकार, लेखा व हकदारी ने ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का आरम्भ किया।



नवनिर्मित भवन का उद्घाटन:

24 जून को नवनिर्मित कार्यालय भवन का उद्घाटन भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू के द्वारा किया गया। ये वो पल था, जिसकी प्रत्येक कर्मी ने प्रतीक्षा की थी। जनवरी 2014 में कार्यालय में लगी भीषण आग ने न सिर्फ भवन को क्षतिग्रस्त किया था बल्कि गोर्टन कैसल में कार्यरत प्रत्येक कर्मी के हृदय को झुलसाया था। बीते वर्ष अदम्य धैर्य.. कर्तव्य-परायणता .. और कार्य के प्रति निष्ठा के ऐसे उदाहरण बने जिन्हें गोर्टन कैसल सदैव याद रखेगा, कि कैसे स्थान की कमी.. असुविधा ...और शिमला की बारिश.. बर्फ और विकट मौसमी परिस्थितियों में भी कार्यालय का कार्य प्रभावित किए बिना सबने एक जुट हो कर निर्माणाधीन परिसर में भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।



स्वतंत्रता दिवस समारोह :

15 अगस्त को 78वां स्वतंत्रता दिवस गरिमामय ढंग से मनाया गया जिसका आरंभ प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा ने तिरंगा फहरा कर किया।



हिन्दी-पखवाड़ा 2024:

इस वर्ष कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आगाज़ प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा सुश्री चंदा मधुकर पंडित के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इसी दिन सुश्री चंदा मधुकर पंडित का विदाई कार्यक्रम भी किया गया। संगीतमयी प्रस्तुतियों के साथ के यह एक भावुक कर देने वाला क्षण था।



पिता: संघर्षों का मसीहा

सूरज वर्मा
लिपिक



पिता...

जीवनरूप ईमारत की बुनियाद होता है,
आशा-आकांक्षाओं का आधार होता है।

पिता...

धैर्य, उमंग और उत्साह का प्रतीक होता है,
गहन अन्धकार में प्रकाश का स्त्रोत होता है।

पिता...

ज्ञान की ज्योति का अमूल्य भंडार होता है,
विकत स्थिति में संयम की मिसाल होता है।

पिता...

सम्पूर्ण परिवार का सक्षम सूत्रधार होता है,
कठिनाइयों में भी सबका कर्णधार होता है।

पिता...

जिंदगी की धूप में वटवृक्ष की छांव होता है,
विफलता में भी सफलता की नींव होता है।

पिता...

संघर्ष की आंधियों में हौसलों की उड़ान होता है,
अपनों के सपनों की सार्थक तस्वीर होता है।

पिता...

मुश्किलों में भी गहन समुंदर सा शांत होता है,
झंझावातों में भी दृढ़निश्चय की चट्टान होता है।

पिता...

असीम स्नेह का शाश्वत स्वरूप होता है,
वह धरती पर ईश्वर का प्रतिरूप होता है।



यात्रा

विजयलक्ष्मी
सहायक लेखा अधिकारी



यात्रा ही तो है
यह जिन्दगी
अनवरत चलती है
वक्त की तरह
अपनों का साथ
कभी अजनबी भी
चलते हैं साथ
चलते-चलते
छूटते जाते हैं
कितने ही हाथ
पूर्ण होती जाती है
उनकी यात्रा
पथिक हैं हम
यह धरा है
एक अस्थायी पड़ाव

भूल जाते हैं हम
इस पड़ाव को
मान लेते हैं स्थाई
खो जाते हैं
जीवन की उलझनों को
सुलझाते हुए
आडम्बरों से भरपूर
चकाचौंध में
याद ही नहीं रहता
जाना है छोड़कर
सब रिश्तों को,
अपनों को
हमसे पहले भी
बहुत अपने जा चुके हैं
उस यात्रा पर

निभा कर निश्चित समय
पल-पल फिसल रही
यह जिन्दगी
संभल, ऐ मन !
अब तो रुख मोड़ अपना
भीतर की ओर
जो खोज रहा तू बाहर
सब भीतर ही तो है
स्वयं को जान लेगा
तो अंत सुखद होगा
यात्रा तो अनन्त है
चलती रहेगी
इस पड़ाव से
अगले पड़ाव की ओर।

मैंने देखा है

सुश्री शालू
कनिष्ठ अनुवादक



मैंने मोहब्बत को नफ़रत में बदलते देखा है
फूल से झड़ते लफ़्जों को अंगारे बनते देखा है
मरहम को मैंने दर्द बनते देखा है
"हम" को "मैं" बनते देखा है

देखा है मोहब्बत को नशे के आगे हारते हुए
लोगों को घर में आस्तीन का साँप पालते हुए
देखा है अपनो को ही मुँह मोड़ते हुए
परछाई को भी अपना साथ छोड़ते हुए

मैंने मोहब्बत को नफ़रत में बदलते देखा है
फूल से झड़ते लफ़्जों को अंगारे बनते देखा है

मैंने झूठ को सच, सच को झूठ में बदलते देखा है
ज़ख्मों को नासूर में बदलते देखा है
खुद को मैंने खुद ही में सिमटते देखा है
अच्छे को बुरा बनते देखा है
देखा है लोगों को पीठ पीछे वार करते हुए
लोगों को हकीकत से डरते हुए

देखा है अमीर को गरीब पर हँसते हुए
लोगों को लालच के दलदल में फँसते हुए
मैंने मोहब्बत को नफ़रत में बदलते देखा है
फूल से झड़ते लफ़्जों को अंगारे बनते देखा है

मैंने सितारों को दिन में दस बार कपड़े बदलते देखा है
नंगे बच्चों को ठंड में मरते देखा है
मजबूरी में मैंने जिस्मों को बिकते देखा है
घमंडियों के सिरों को भी झुकते हुए देखा है
देखा है खूबसूरती को ढलते हुए
लोगों को नफ़रत की आग में झुलसते हुए
देखा है नम आँखों को और हसीन मुस्कानों को
रातों रात ढेर होते मकानों को

मैंने मोहब्बत को नफ़रत में बदलते देखा है
फूल से झड़ते लफ़्जों को अंगारे बनते देखा है

वो दौर

मैंने आतंक को पनपते हुए देखा है
फौजियों को दूसरों के लिए लड़ते हुए देखा है
पूत को मैंने कपूत बनते देखा है
बेबस माँ को अंदर ही अंदर झुलसते देखा है

वो दौर कुछ ऐसा था
जब हम भी चहचहाते थे.....
वो दौर कुछ ऐसा था
जब हम भी नदियों-नहरों में गोते लगाते थे.....

देखा है भेदभाव रंग और जाति का
साथ छूटता सबसे प्यारे साथी का
देखा है लोगों को बदलते हुए
खाक होकर मिट्टी में मिलते हुए

ख्वाहिशें बस इतनी ही थी
जो कुछ आनों में भी पूरी हो जाती थी.....
रोज सुबह नहलाकर
माँ अपने हाथों से रोटी खिलाती थी.....

मैंने मोहब्बत को नफ़रत में बदलते देखा है
फूल से झड़ते लफ़्जों को अंगारे बनते देखा है

जो सुकून आँगन में खेलने में मिलता था
वो आज कल की टेक्नोलॉजी वाली
गेम्स में कहाँ.....

जो मजा दादा-दादी से कहानी सुनने में आता था
वो आज-कल की चैट्स में कहाँ.....

आज हर कोई बस पैसा कमाने की होड़ में लगा है
भूल कर कि क्या गलत, क्या सही है
जिंदगी की भाग दौड़ में इतना उलझ गए हैं
कि जिंदगी जीने का वक्त ही नहीं है.....



कहां गए वो सुहाने दिन

जगदीश राणा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



पगडंडियां हुआ करती थी, जिनसे
स्कूल जाया करते थे हम
अपने हुआ करते थे, जिनसे
बतियाया करते थे हम
घर की वादी में आँगन
हुआ करते थे, जहाँ
टापू, समुद्र, गुल्ली-डंडा, गिट्टियाँ, छुपन-छुपाई
ये सारे खेल खेला करते थे बच्चे
बचपन था ऐसा सुहाना
कभी कागज़ की नाव बनाकर
बरसातों में नाव चलाया करते थे
पानी में छमछमा कर चला करते थे....
यौवन की दहलीज में आकर
वो याद आता है मधुवन, वो सावन
अम्बुया के नीचे दौड़ते-गिरते बच्चे
आमों को उठाते
खेतों के बीड़ों में छिपते थे

पेड़ों की मजबूत शाखाओं पर
रस्सी डालकर झूला झूलते
और झुलाया करते थे ...
वो तारों की छाँव में मंजे डालकर सोना
कभी टूटते तारे को देख कोई मन्नत माँगना
खुले आँगन में बाण की खटिया लगाकर
तारों को गिनते-गिनते नींद के आगोश में
सो जाना.....
भोर भरी बेला में पंछियों का मीठा कलरव
सुनकर उठना कितना अच्छा लगता था
वो दौर हमारे बचपन, यौवन का सच्चा लगता था
उम्र की जिस दहलीज में
खड़े हैं हम वहाँ से वो सुहाने दिन
इक याद बनकर रह गए हैं.....
न जाने कहाँ गये वो दिन
अब तो
जीवन से सावन..घरों से आँगन

वो पगडंडियां..

वो माँ-बाबा की झिडकियां

वो रास्ते.. वो वास्ते

वो खेले, वो मेले

सब कुछ खो गया

तरक्की की राहों में हँसना, मिलना-जुलना

सब पीछे छूट गया

वो बच्चों की टोलियाँ, वो मीठी बोलियाँ,

हंसी मजाक, वो ठिठोलियाँ

अब नहीं रही कहीं

विकास की रफ़्तार में

बढ़ गये हम इतने आगे

चाँद की बातें हम धरती पर नहीं

आसमां से करते हैं...

तारे दिन को नहीं अब रातों में भी

नहीं दिखते हैं

पहुँच गए हैं हम उस दौर में

जहाँ कागज़ के फूल खिलते हैं घर आँगन में

बरसाते आती हैं कहर बरपाती हैं

स्वाद लेते नहीं अब खाने का बस

पेट भरते हैं..

जीने के लिए दिखावे की दुनिया बसा ली है अब हमने

जिसमें हम हैं और हमारा मोबाइल है

रात दिन हर पल जिससे बतियाते हैं हम

हँसते रोते गाते गुनगुनाते नाचते हैं हम

आज के दौर की कठपुतलियां जैसे बन गए हैं

नचाता है मोबाइल वैसे नाचते हैं हम

यह किस दौर में आ गए हैं

बैठे बैठे बस यही सोचते हैं हम

कहाँ गये वो सुहाने दिन।



बूढ़े हो जाए जब माँ बाबा

जगदीश राणा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब बूढ़े हो जाए माँ बाबा
घर में रखना ऐसे
जैसे माँ आँचल में छुपा लेती थी तुम्हें
बचपन में..
आंधी तूफानों से बचा लेती थी
जब पिता लाचार हो जाए
चलने-फिरने में
तब संभालना तुम ऐसे उनको
जैसे
बालपन में तुम्हें गिरते-गिरते
संभाल लेते थे...
उंगली पकड़कर चलाते थे तुमको
बीमार हो जाए जब दोनों
तीमारदारी करते थे तुम्हारी जैसे
वैसे करना तुम उनकी
रातों को जाग जाग माँ थपकी देकर
सुलाती थी तुमको
पिता भाग भाग कर डॉक्टर के पास ले जाते

थे तुम्हें
वैसे माता पिता का ख्याल रखना जब
बूढ़े हो जाए माँ बाबा
मत बांटना कभी उनको
कभी टुकड़ों की तरह
न कमरों में...न किसी हिस्से में..
ऐसे रखना
जैसे रखते तुम्हें पलकों में अपनी
जब बूढ़े हो जाए माँ बाबा
बांटना मत उनको क्योंकि
माता पिता बांटना नहीं चाहते बस
बांटना जानते हैं !!



तुम

प्रभात कुमार
सहायक पर्यवेक्षक



सुनो कि तुम...
दुनिया के बनाए सांचे में,
कहां ढल पाओगी

जो ढल भी गई
इसको..उसको..सबको..
खुश कर पाओगी?

तुम भी जानती हो
नामुमकिन है ये

कोशिश करो
किसी के ढांचे में ढलने की जगह
तराश लो खुद को

क्योंकि
तुम अनुकृति हो उस ईश्वर की
तुम..स्वयं में सर्वश्रेष्ठ हो।



बेटियाँ

सोनिया शर्मा
एम.टी.एस.



हर घर की रौनक होती हैं बेटियाँ,
सारे घर में चहकती हैं बेटियाँ,
दिल के बहुत करीब होती हैं बेटियाँ,
माँ की प्यारी सखी बन जाती हैं बेटियाँ,
छोटे-बड़े काम में सलाहकार बन जाती हैं बेटियाँ,
हमें भी जीने का मतलब सिखाती बेटियाँ,
हमारी फिक्र करने वाली होती हैं बेटियाँ,
न हो घर में तो सूना लगता है,
हर कोने में सन्नाटा पसरा रहता है,
हँसी इनकी घर को गुलज़ार करती है,
इनकी मुस्कराहट से सब खिल जाते हैं,
हर घर की जान होती हैं बेटियाँ,
एक नहीं, दो घरों की जान होती हैं बेटियाँ,
दो घरों को जोड़कर परिवार बनाती हैं बेटियाँ,
माता-पिता के लिए पारस होती हैं बेटियाँ,
दिल के चमन को महकाती हैं बेटियाँ।



जिन्दगी है सस्ती

सुनीता देवी
लेखापरीक्षक



कहते है अब जिन्दगी है सस्ती
कोई क्यूँ मिटा रहे है अपनी हस्ती
क्या जिन्दगी हो गई इतनी सस्ती?
क्यों बच्चों में छोटी बातों पर
मरने की चढ़ी है मस्ती
क्या उन्हें कुछ भी याद नहीं आता
कि माँ -बाप ने उन्हें कैसे पाला और पढ़ाया
उनके सपनों को सजाया
क्या जिन्दगी हो गई इतनी सस्ती।
क्यों बच्चों को टीचर और माँ- बाप से लगता है डर
कि वो फंदा लगाकर जाते है मर
क्या नहीं आता होगा उन्हें अपनों का ध्यान
उनकी कुर्बानी का नहीं करते भान
क्या जिन्दगी हो गई है सस्ती।
जिस माँ- बाप ने उंगली पकड़ कर चलाना सिखाया
बच्चों ने उनको क्यों रुलाया क्या गलती है उनकी
जिस चीज में हाथ रखा वही पायाफिर भी उनको

माँ-बाप पर तरस नहीं आया
क्या जिन्दगी हो गई है सस्ती।
जिन्दगी जीने के बजाय उन्होंने मौत को मुँह लगाया
सब कुछ मिल रहा है फिर भी
चढ़ रही है मरने की मस्ती
एक अवगुण देखकर मौत को गले लगते,
सौ गुण है माँ-बाप में
यह भी भूल जाते है
क्या जिन्दगी हो गई है सस्ती,
क्या जिन्दगी हो गई है सस्ती!!



दास्तां

रोहित कुमार मंडल
लेखाकार



जो कह दूँ सच, क्यों हो जाते हो नाराज भाई,
मैं सच्चा था कल, मैं सच्चा हूँ आज भाई,
बातें मेरी गहरी, कैसे कह दूँ कागज़ी,
मैं वास्तव से वाकिफ़, आप ख्वाबों में आज भी।

गिनता हूँ जब तारे, दिखती है तब सादगी,
देखो, छिपाता हूँ मैं कैसे, आँसू आधी रात के,
हाल क्या बताऊँ, बस खुद से मैंने बात की,
बरसों से खाई नहीं, रोटी माँ के हाथ की।

दोस्त पूछते हैं, पहले करता था मज़ाक,
आज गुमसुम सा क्यों रहता हूँ,
नहीं छोड़ूँगा जीना, मुझे करो परेशान नहीं,
पर इतनी भी ना दो तकलीफ़,
इंसान हूँ भगवान नहीं।



प्रकृति के अनमोल रत्न

हेतराम जसपाल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



ये पहाड़, पेड़, नदियां, ये झरने
जैसे हैं.. इन्हें वैसे ही रहने दो
प्रकृति के इन अनमोल रत्नों को
अपनी ही मौज में बस बहाने दो

कृत्यों पर अपनी लगाम लगा कर
वजूद इनका खतरे में मत डालो तुम
जीवन खुशहाल करते है हम सबका
सहजता से बस इनको सम्भालों तुम

ये बहुत कुछ कहना चाहते हैं
सुनों तो इनको जरा ध्यान लगा कर
खुशियां बांटना चाहते है ये सबसे
प्रकृति को सुंदर, खुबसूरत बनाकर

विकास के नाम पर यह अपना दोहन
कब तलक यूं ही सहन कर पाएंगे
दर्द की जब पराकाष्ठा हो जाएगी
फिर यह अपना प्रचण्ड रूप दिखाएंगे

ये रक्षक है, सहारा है, साथी है सबके
जीवन इनका बेहद अनमोल मान लो
इनके बिना नामुमकिन है गुज़ारा
इनको सहेजने की तुम गांठ बांध लो

तितर-बितर हो जाएगी दुनिया सारी
जलजला ये ऐसा लाएंगे
ज़मिदोज़ हो जाएगी कायनात सारी
मनसूबे सबके धरे के धरे रह जाएंगे

ये रहेंगे तो जीवन मस्ती में जिएंगे हम
बिना इनके हम सांस नहीं ले पाएंगे
पग-पग इनका साथ निभाना हमको
इन्हीं से तो बहारे-चमन लहराएंगे

इसलिए...
पेड़, पौधों का करके संरक्षण
जीवन होगा खुशहाल सभी का
प्रकृति के संग-संग रहना सीखो
तंदुरुस्त रहेगा हाल सभी का।

मैंने देखा है

श्री अरुण कुमार
लेखापरीक्षक



मैंने देखा है, बीज को बड़ा होते घने पत्तों के साथ,
उनकी डालों को देखा है, आँचल जैसा फैलते
छाँव के लिए, गर्मी से आकुल मुसाफिरों के आराम के लिए।
मैंने देखा है, वो फूलों की खुशबू पर भौरों को मद-मस्त होते हुए,
मैंने देखा है, पेड़ों को फलों से लोगों का पेट भरते हुए,
मैंने देखा है, उस नन्ही सी चिड़ियाँ को एक से दो, दो से चार होते हुए,
मैंने देखा है, बंदरों लंगूरों को डालों पर उछलते-कूदते हुए।
जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मेरा गाँव हरा से भूरा हुआ,
घर हमारे बड़े हुए और वो पेड़ बूढ़ा हुआ,
अब वह पेड़ फल पैदा नहीं करते,
उजड़ गए हैं चिड़ियों के घोंसले,
अब तो बंदर-लंगूर भी उस पर उछला नहीं करते।
अब सरकार हमें कहती है, पेड़ लगाने को,
इतना पढ़-लिख कर भी हम, जगा नहीं करते।
बचपन में जहाँ हरियाली थी,
वहाँ अब खोखली इमारतें खड़ी हैं
मुफ्त की हवा के लिए भी,
आज लोग कतार में लगे हैं।
कैसा विकास कर लिया हमने, संस्कार छूटा,
घर बार छूटा, गाँव का त्यौहार छूटा,
धरती-सूरज-चाँद सब हमें ताक रहे हैं,
अपने ही दाव-पेंचों से हम हार रहे हैं।



कब तक खुद को दोषी ठहराएगा

श्री अरुण कुमार
लेखापरीक्षक

माना की कुछ गलतियाँ की थी तूने किसी ज़माने में,
कुछ टशन में, अनजाने में या शायद दुनिया को रिझाने में।
माना उन गलतियों का साया आज भी तेरा पीछा नहीं छोड़ता,
दिन में बेचैनी देता है, रातों को है झकझोरता ।।
माना कई सवालों का बवंडर आज भी तुझे सताता है,
काश उस रोज ऐसा न किया होता, काश उस रोज खुद पर काबू रखा होता,
इस बात का एहसास, रह रह कर दिलाता है।
माना तुझे पछतावा है, तुझे अपनी भूल का एहसास है,
हालात एक रोज फिर सुधरेगे इस बात की भी दिल में आस है ।।
माना जो तूने खोया है वे बेहद ही तेरे करीब था,
तेरे दिल से सुकून छीन गया, क्योंकि वो तेरे हौसलों का पंख था,
वो तेरे ख्वाहिशों की नींव था ।।
जो बीत गया सो बीत गया, अब लाख कोशिश कर ले पगले,
चाह कर भी इसे न बदल पाएगा ।
वह माहौल ही कुछ और था, हालात के आगे बेबस था तू,
शायद तेरी जिंदगी का बेहद मुश्किल दौर था।
बस कर पगले और कितना खुद को दोषी ठहराएगा,
इस ग्लानि को दिल में रख कर, तू जिन्दा तो रहेगा पर कब तक जी पाएगा।
न सता.. न तड़प.. अब तो तू इन्साफ कर दे,
एक मासूमियत में हुई भूल के लिए अब तो खुद को माफ़ कर दें ।
हौसला रख, कोशिश कर बढ़ता चल
एक दिन फिर से सब कुछ सुधर जाएगा,
भगवान ने चाहा तो तेरा वक्त फिर से लौट कर आएगा,
बस कर पगले और कितना तू खुद को दोषी ठहराएगा ।।



याद-ए-रहबर

श्री पवन कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



क्यूँकर इक खामोशी सी तारी हो गई अब !
बात करनी भी, मुश्किल सी अब होती जा रही है !!

शायद रहबर-ए-यारा की हिदायतें कम सुनी !
जो ये दुनिया की नसीहतें अब सता रही हैं !!

देख लिए यूँ रिश्ते-चाव, बदलते जमाने के !
हालत-ए-हाल पर हमारे, निगाहें उनकी बदलती जा
रही हैं !!

फकत चल भी न तो पाते हैं हम, दौर-ए-जमाने के
साथ !

चाव करते रहे उनका, ये जो हमको ठुकरा रही है !!
रहबर यूँ तो बताते रहे, निकलो कमतर घर से जनाब !
भीग जाओगे जाना, दुनिया-ए-बरसात आ रही है !!

ना समझे खुद को पहल शायद, चले थे जमाने की ओर !
बस मुड़ते हैं रहबर की जानिब, वहीं से उम्मीद-ए-वफा आ
रही है !!

नाज है जानम तुम पर, उम्मीदे कैफियत तारी है !
इंतजार-ए-यारा तेरा, सुकून-ए-वफा की सदा आ रही है !!



ख्वाब - एक नज़्म

समता खानचंदानी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



मुंतेजिर आंखों में रहता है
यूं तो लबकुशा है बहुत....पर चुप रहता है,
जज्बातों की आंच में धीमे-धीमे पकता है..
तब जा कर कोई ख्वाब, करवट लेता है..
वो ख्वाब...
जो रतजगों की ग़ज़ल कानों में गुनगुनाता है
अकेले कमरे में तो रक्स करते हुए चलता है मगर..
हर आहट पर ठिठक के रुकता... सहम जाता है...

वो ख्वाब...
जो सौ पर्दों में छुपाया जाता है
मिज़ह की नोक तक से बचाया जाता है
फिर अक्सर छलकता है...गिर जाता है ..
ये ख्वाब..
एक लड़की की सपनीली आंखों का
वो अशर्फी ख्वाब है,
जो देखने में तो बड़ा तिलस्मी है..पर है
खुशबू की मानिंद..
मौजूद हो के भी होता है नामौजूद!!



आज मैं रिटायर हो रहा हूँ

सेवादास संधू

सेवानिवृत्त: व० लेखापरीक्षा अधिकारी



आज मैं रिटायर हो रहा हूँ, कल ऑफिस नहीं आऊंगा।
आज तुम्हारे संग खड़ा हूँ, कल यादों में बस जाऊंगा।।
सूरज तो फिर भी निकलेगा, पंछी फिर भी चहचहाएंगे।
मगर यह समां न होगा, न यह चेहरे ही नज़र आएंगे।

आज हम जुदा हो जाएंगे, ऐसा सुनने में आया है।
धडकनें बे-काबू है, साँसों का चलना भी नहीं आसान है।
फिर याद आया, कि अगर आए है तो जाना भी पड़ेगा।
क्योंकि आना और जाना तो कुदरत का अटल विधान है।

इन लम्हों को संजो लूंगा, मैं यादों के अन्मोल खजाने में
यादों जैसा कोई दोस्त नहीं, इस बे-दिल, बे-रहम जमाने में
नाती-पोतों संग मस्ती करके, जब भी मैं थक जाऊंगा।
इन यादों की मस्ती से, फिर तन्हाईयों का दर्द मिटाऊंगा।

हर इंसान की ज़िदगी में यह चार पड़ाव आते हैं।
बचपन, जवानी, प्रौढ़ा और फिर बुढ़ापा छा जाता है।
हर पड़ाव में नया जोश, नई उमंग, नया फर्ज़ होता है।
यही फर्ज़ निभाते-निभाते, तमाम जीवन गुज़र जाता है।।

जिन्दगी की जद्दोजहद में, मैं इतना व्यस्त हो गया था।
सोच ही नहीं पाया कि प्रभू ने, किस लिए हमें बनाया है।।

कोई तो मकसद होगा, तभी तो सन्त कबीर ने फरमाया है।
'कवन काज सिरजे जग भीतर, जनम कवन फल पाया' है।।

हम कौन, कहाँ से आए है, वापिस कहाँ पर जाना है।
अनसुलझी यह पहेली है, इसे सुलझाने का अरमान है।।
बताया जाता है, चौरासी लाख योनियों का यह संसार है।
इंसान का रूतवा अव्वल है, सब सन्तन का फरमान है।।

यह तो मालूम पड़ गया कि कोई काज है जो करना था।
मगर कब और क्या करना था, अनसुलझा यह राज़ है।।
नवम् पात्शाह श्री गुरू तेग बहादुर जी का मुखबाक है।
हे जीव: "राम सिमर, राम सिमर, एहा तेरा काज है।।"

पता नहीं कितनी साँसे, कितना समां और अब बाकी है।
अधूरा जो काज पड़ा है, बस पूरा उसे है अब करना।।
अग्रजों के आशीर्वाद, अनुजों की सहयोग की दरकार है।
मेरी इच्छा प्रभू पूर्ण करें, यही दुआ आप सब करना।।
माँ-बाप के संस्कार, सतगुरू कृपा और आप के सहयोग से।

छत्तीस वर्ष का यह सफर कब कट गया, पता ही नहीं चला।।
पता चला, मैं रिटायर हो रहा हूँ, कल ऑफिस नहीं आऊंगा।
आज तुम्हारे संग खड़ा हूँ, कल यादों में बस जाऊंगा।।



राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।
2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।
3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10 (4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं। इसके अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं:-

"ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर ग्राहकों की सहमति से जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां, सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टररोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि।"
4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारूपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जो कि आदेश में विनिर्दिष्ट हों।
5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मढ़ें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी और मुद्रित या

- उत्कीर्ण होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताएं एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।
6. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमावली के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन से उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।
 7. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक के कार्यवृत्त में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों पर पुनः बल दिया है। ये सुझाव हैं: सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।
 8. राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम-काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधों के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करें। साथ ही, संयुक्त सचिव (प्रशासन) / संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।
 9. कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा का संवर्ग गठित होना चाहिए, जो कि कुल पदों के अनुरूप हो। मंत्रालयों/विभागों के अधीनस्थ कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारियों को केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के समान वेतनमान व पदनाम दिए जाएं।
 10. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न-पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप से, हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार या मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों को हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए।
 11. केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा सभी सेवाकालीन, विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं (अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाओं सहित) में अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए। प्रश्न

पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी, में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां अभ्यर्थियों को पूछे गए प्रश्नों का उत्तर हिंदी में देने की अनुमति दी जाए।

12. सभी प्रकार की वैज्ञानिक तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।
13. केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन करें।
14. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से हो। 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।
15. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कोई भी गैर सरकारी संस्था केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा का प्रशिक्षण देने के लिए अधिकृत नहीं की गई है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र पहले से ही देश भर में काम कर रहे हैं जो केंद्र सरकार के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण निःशुल्क देते हैं एवं राजभाषा पर विचार-विमर्श के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा संबंधित कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'लीला' राजभाषा के माध्यम से अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।
16. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए।
17. केंद्र सरकार के कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है।
18. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित

लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

19. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा अनुवाद कार्य के लिए किया जा सकता है।
20. अनुवादकों को, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियों के रूप में सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाए।
21. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति आएगी।
22. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।
23. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने दायित्वों से संबंधित विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।
24. केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के

प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई-वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म "ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।

25. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और नियमित रूप से अद्यतित करवाएं।
 26. राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हर वर्ष कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए 5 दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षु कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर सकेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की वेबसाइट www.chti.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।
 27. राजभाषा विभाग द्वारा मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022-23 से संशोधित "राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना" लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत अब भारत के नागरिकों को निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे:-
- (क) हिंदी में ज्ञान-विज्ञान संबंधी मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।
 - (ख) न्यायालयिक विज्ञान, पुलिस, अपराधशास्त्र अनुसंधान और पुलिस प्रशासन पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।
 - (ग) संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर आदि पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।
 - (घ) विधि के क्षेत्र में हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, बोर्ड / स्वायत्त निकाय / ट्रस्ट आदि, राष्ट्रीयकृत बैंक तथा हिंदी गृह पत्रिकाओं के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाते हैं। इन दोनों पुरस्कार योजनाओं की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

हिन्दी पखवाड़ा-2023 प्रतियोगिता परिणाम

प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1. कविता-पाठ	श्री हेतराम जसपाल (व.ले.प.अ.)	श्री शैलेश सोनी, (स.ले.अ.)	श्री दयासागर (स.ले.प.अ.)
2. श्रुतलेख	श्री राजेश कुमार शर्मा, (स.ले.प.अ.)	सुश्री श्रुति (क.हि.अ.)	सुश्री शालू (क.हि.अ.)
3. वाद-विवाद	श्री राहुल पुंज, (लेखाकार)	श्री रजत प्रजापति, (स.ले.प.अ.)	श्री अरुण कुमार, (ले.प.)
4. टिप्पण-आलेखन	श्री कुलदीप पाठक, (स.ले.प.अ.)	श्री सुदर्शन शर्मा, (स.ले.अ.)	श्री राजेश कुमार शर्मा, (स.ले.प.अ.)
5. कंप्यूटर पर टंकण	श्री अरुण कुमार, (ले.प.)	श्री भूपेन्द्र सिंह, (निजी सहायक)	श्रीमती सत्यावती, (सहा. पर्य.)
6. निबंध	श्री मुकेंद्र कुमार, (स.ले.प.अ.)	श्री मोहन शर्मा, (लेखाकार)	श्री संजय शर्मा, (व.ले.प.)
7. आशुभाषण	श्री निर्मल उपाध्याय, (स.ले.प.अ.)	श्री शैलेश सोनी, (स.ले.प.अ.)	श्री संजय शर्मा, (व.ले.प.)

वर्ष 2023-24 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी
(लेखापरीक्षा)

क्रम संख्या	सर्वश्री/श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति
1	बृज लाल वर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2023
2	नरिंदर सिंह वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2023
3	राजेश कुमार	लेखापरीक्षक	30.04.2023
4	स्वरूप चंद	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2023
5	अनिल कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2023
6	दिल राज	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2023
7	रूप लाल	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2023
8	सतीश कुमार	मल्टी टास्किंग स्टाफ	17.11.2023 (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
9	ज्ञान चंद भाटिया	पर्यवेक्षक	31.01.2024
10	कुलदीप	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2024
11	कृष्ण कुमार	सिलेक्शन ग्रेड रिकॉर्ड कीपर	31.01.2024
12	परवीन कुमार	पर्यवेक्षक	29.02.2024
13	रमेश चंद वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	29.02.2024
14	राम स्वरूप	सहायक पर्यवेक्षक	29.02.2024
15	महेंदर कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	29.02.2024 (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
16	पूरन चंद	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024
17	रतन सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024
18	ऋषि पाल	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024

**वर्ष 2023-24 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी
(लेखा व हकदारी)**

क्रम संख्या	सर्वश्री/श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति
1	बाल किशन शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.04.2023
2	रमेश दत्त शर्मा	पर्यवेक्षक	30.04.2023
3	हरीश जुल्का	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2023
4	जय प्रकाश शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
5	नरेन सिंह	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
6	चंदर शेखर सयाल	पर्यवेक्षक	30.06.2023
7	वरिंदर कुमार	पर्यवेक्षक	30.06.2023
8	रानी दत्ता	पर्यवेक्षक	31.08.2023
9	अनिल कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2023
10	जसवंत सिंह	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.09.2023
11	भूपेश कुमार तनवर	पर्यवेक्षक	31.10.2023
12	वेद प्रकाश	पर्यवेक्षक	30.11.2023
13	राज कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2023
14	हरी सरन	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2024
15	पुष्पा चौहान	पर्यवेक्षक	31.01.2024
16	हेमेंदर कुमार भारद्वाज	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2024
17	सोम नाथ	सहायक पर्यवेक्षक	29.02.2024
18	तृप्ता देवी	सहायक पर्यवेक्षक	29.02.2024
19	धनी राम	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2024
20	संजय अवस्थी	पर्यवेक्षक	31.03.2024

हिमप्रभा अंक 93वें के "प्रशंसा पत्र"

[illegible][illegible][illegible][illegible]

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा),
चम्बा, पोस्ट-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTS OFFICER
CHAMBA (LEGA) CHAMBA-160017
फोन-01972-270366 फैक्स-01972-270369
E-mail: cpal@nic.gov.in

आगत क्र. क. खन/2023-24/123 दिनांक: 12/12/2023

हटा में,

बौद्ध सेवा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
आचार्य प्रधान महालेखाकार (ले. र. र.),
दिल्ली प्रदेश, दिल्ली-110003

विषय: हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें संवर्धन के सम्बंध में।

संदर्भ:

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कौनसी हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें संवर्धन प्राप्त हुई, साथ ही धनराशि चम्बा के इस अंक में, सभी लेख, रचनाएँ, चित्र, विचार एवं पत्रिका प्रकाशित है।
इस पत्रिका को समस्त एवं सम्पूर्ण रूप से योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को हमारे कार्यालय अर्द्धसालिक लेखा की जांच के तहत शुभकामनाएँ।

क्र.सं.	व्यक्ति/संस्था	दान/दान
1	समर्थन श्री सुनील कुमार जी	प्रकाशन के शुल्क में राशि
2	श्री प्रकाश शर्मा	आवृत्ति
3	श्री प्रकाश कुमार	आवृत्ति
4	श्री प्रकाश	प्रकाशन के शुल्क में राशि

इस पत्रिका को समस्त एवं सम्पूर्ण रूप से योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को शुभकामनाएँ।

महोदय,
दिनांक:
हिंदी अधिकारी

International Centre for Information Systems & Audit
International Training Centre of Comptroller & Auditor General Of India
www.cag.gov.in/cisa/en

संख्या/Address-1610846/1/2018-Admin-Part/Comp.No.6467/464 दिनांक: 12.12.2023

हटा में,
बौद्ध सेवा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा),
दिल्ली-110003
विषय: आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें अंक के प्रेषण के सम्बंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कौनसी हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें संवर्धन प्राप्त हुई, साथ ही धनराशि चम्बा के इस अंक में, सभी लेख, रचनाएँ, चित्र, विचार एवं पत्रिका प्रकाशित है।
इस पत्रिका को समस्त एवं सम्पूर्ण रूप से योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को हमारे कार्यालय अर्द्धसालिक लेखा की जांच के तहत शुभकामनाएँ।

महोदय,
दिनांक: 12/12/2023
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)

प्रोसेसिंग
12/12/23
श्री प्र. र. र.
12/12/23

महोदय,
दिनांक: 12/12/23
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)

A-52, Sector-02, Institutional Area, Phase-II, Rohtak - 201309 (U.P.) INDIA
Tel: +91-120-2490000, 01-120-2490041 Fax: +91-120-2490041 / 2491430

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा),
चम्बा, पोस्ट-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTS OFFICER
CHAMBA (LEGA) CHAMBA-160017
फोन-01972-270366 फैक्स-01972-270369
E-mail: cpal@nic.gov.in

आगत क्र. क. खन/2023-24/123 दिनांक: 12.12.2023

हटा में,

बौद्ध सेवा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
आचार्य प्रधान महालेखाकार (ले. र. र.),
दिल्ली प्रदेश, दिल्ली-110003

विषय: हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें संवर्धन के सम्बंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गुरुवार हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें अंक की हिंदी पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का वह अंक प्रेषित है। आपका आभार। कौनसी हिंदी पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ, पत्रिका एवं प्रेषण आपके हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर लेख एवं रचनाएँ प्रकाशित हैं।
आपका हिंदी के प्रकाश-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को पत्रिका के समस्त प्रकाशन के लिए हार्दिक आभार एवं पत्रिका की उपयोगिता के लिए शुभकामनाएँ।

महोदय,
दिनांक: 12/12/23
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)

प्रोसेसिंग
12/12/23
श्री प्र. र. र.
12/12/23

महोदय,
दिनांक: 12/12/23
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा), रायपुर

क्र.हिंदी कक्ष/पाक/2023-24/123 दिनांक: 08.12.2023

प्रति,
बौद्ध सेवा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)
प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)
दिल्ली प्रदेश, दिल्ली-110003

विषय: वार्षिक संवर्धन हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें अंक की पाक की प्रेषण।
संदर्भ: पर सं. क्र. ले. प. लि. ख. पा/2023-24 दिनांक: 09.11.2023

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गुरुवार हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93वें अंक की हिंदी पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का वह अंक प्रेषित है। आपका आभार। कौनसी हिंदी पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ, पत्रिका एवं प्रेषण आपके हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर लेख एवं रचनाएँ प्रकाशित हैं।
आपका हिंदी के प्रकाश-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को पत्रिका के समस्त प्रकाशन के लिए हार्दिक आभार एवं पत्रिका की उपयोगिता के लिए शुभकामनाएँ।

महोदय,
दिनांक: 08/12/23
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)

प्रोसेसिंग
12/12/23
श्री प्र. र. र.
12/12/23

महोदय,
दिनांक: 12/12/23
आचार्य प्रधान महालेखाकार (लेखा-रीक्षा)

23

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्पोरेट महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central),
Chandigarh

सीबीए/राजभाष/सन्देश/2023-24/ 93-6 दिनांक 23/11/23

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी (राजभाषा),
कार्पोरेट प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश 171 003

विषय- हिंदी ई-पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक के संबंध में।

महोदय/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक की एक ई प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्राशस्तनीय व पठनीय हैं। पत्रिका की साव-समय आवश्यक है। रचनाकारी एवं पत्रिका के कुशल संचालक संतुष्ट की हार्दिक बधाई।

अथ है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उच्चतम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद।

भारदीया
वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी/हिंदी

संकेत-आ/पि-क/9
4/30
14/12/23
राजेश जी

कार्पोरेट महानिदेशक लेखा परीक्षा
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्पोरेट महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central),
Chandigarh

पत्रिका नं. नि.ले.प./के/रा.भा.अ./पत्रिका/76 दिनांक 18-12-2023

सेवा में
पौनजी संकेतियट
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, हिमाचल - 171003

विषय- कार्पोरेट पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक की प्रति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक की प्रति हुई, रास्त में सम्मिलित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की प्रगति रोचक, मनोरंजक, मनोरंजक पठनीय एवं सराहनीय हैं। निम्नलिखित कुछ रचनाएँ संलग्न मुद्रित प्रकाशनीय हैं-

क्र.सं.	रचना/लेख	रचनाकार/लेखक (श्री/शु.श्री)
1	प्रभु की काव्यमय - शुभच	विष्णु
2	भारतीय महाकाव्य महाकाव्य	शुभच
3	हिमाचल प्रदेश का भू-गोल	विष्णु कुमार शर्मा
4	शुभच काव्य वन, शुभच काव्य वन	अनुराग शर्मा

पत्रिका के शेष संलग्न हेतु संघटक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के उच्चतम भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारदीया
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्पोरेट महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central),
Chandigarh

सीबीए/राजभाष/सन्देश/2023-24/ 93-6 दिनांक 23/11/23

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी (राजभाषा),
कार्पोरेट प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश 171 003

विषय- हिंदी ई-पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक के संबंध में।

महोदय/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक की एक ई प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्राशस्तनीय व पठनीय हैं। पत्रिका की साव-समय आवश्यक है। रचनाकारी एवं पत्रिका के कुशल संचालक संतुष्ट की हार्दिक बधाई।

अथ है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उच्चतम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद।

भारदीया
वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी/हिंदी

संकेत-आ/पि-क/9
4/30
14/12/23
राजेश जी

कार्पोरेट महानिदेशक लेखा परीक्षा
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्पोरेट महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central),
Chandigarh

पत्रिका नं. नि.ले.प./के/रा.भा.अ./पत्रिका/76 दिनांक 18-12-2023

सेवा में
पौनजी संकेतियट
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, हिमाचल - 171003

विषय- कार्पोरेट पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक की प्रति के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "हिमप्रभा" के 93 वें अंक की प्रति हुई, रास्त में सम्मिलित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की प्रगति रोचक, मनोरंजक, मनोरंजक पठनीय एवं सराहनीय हैं। निम्नलिखित कुछ रचनाएँ संलग्न मुद्रित प्रकाशनीय हैं-

क्र.सं.	रचना/लेख	रचनाकार/लेखक (श्री/शु.श्री)
1	प्रभु की काव्यमय - शुभच	विष्णु
2	भारतीय महाकाव्य महाकाव्य	शुभच
3	हिमाचल प्रदेश का भू-गोल	विष्णु कुमार शर्मा
4	शुभच काव्य वन, शुभच काव्य वन	अनुराग शर्मा

पत्रिका के शेष संलग्न हेतु संघटक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के उच्चतम भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारदीया
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



वक्ताओं की ताकत भाषा,
लेखक का अभिमान है भाषा,
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी,
हमारी प्यारी हिंदी भाषा ।





"मैं किसी समुदाय की प्रगति को महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति के स्तर से मापता हूँ"
- बी. आर. अंबेडकर

आंतरिक शिकायत समिति

महिला सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता

- सुश्री भानु सिंह, अध्यक्ष (आईए एवं एएस)
- श्री मनोहर लाल ग्रेवाल, सदस्य
- सुश्री पूनम ठाकुर, सदस्य
- श्री राम दास भवानी, सदस्य
- सुश्री गीतिका सूद, सदस्य

DOPT के द्वारा कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम पर सूचना दस्तावेज डाउनलोड करने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।



सीसीएस (आचरण) नियम 1964 का नियम 3(C) कामकाजी महिलाओं के यौन उत्पीड़न का निषेध

- (1) कोई भी सरकारी कर्मचारी किसी भी महिला के कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के किसी भी कृत्य में लिप्त नहीं होगा।
- (2) प्रत्येक सरकारी कर्मचारी जो कार्यस्थल का प्रभारी है, ऐसे कार्यस्थल पर किसी भी महिला के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए उचित कदम उठाएगा।

स्पष्टीकरण - इस नियम के प्रयोजन के लिए, "यौन उत्पीड़न" में ऐसा अवांछित यौन रूप से निर्धारित व्यवहार शामिल है, चाहे प्रत्यक्ष रूप से या अन्यथा, जैसे -

- (क) शारीरिक संपर्क और प्रगति;
- (ख) यौन एहसान की मांग या अनुरोध;
- (ग) यौन रूप से रंगीन टिप्पणी;
- (घ) कोई अश्लील साहित्य दिखाना; या
- (ङ) यौन प्रकृति का कोई अन्य अवांछित शारीरिक, मौखिक या गैर-मौखिक आचरण।

हिन्दी पखवाड़ा-2023 समापन समारोह



मुख्य अतिथि, साहित्यकार श्री एस आर हरनोट का स्वागत



पुरस्कार वितरण



हिमप्रभा अंक 93वें का विमोचन



सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

देवभूमि हिमाचल

